वर्ष 45 अंक: 4-5 14.11.2022 सोमवार (जुलाई-अक्तुबर) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00
महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

Sadhu Parv 2022

SAVE THE DATES DECEMBER 23-24-25

मरज़ी में तेरी मिट जायें...

निमंत्रण

जय स्वामिनारायण!

बृहद् गुणातीत समाज के शिरछत्र **संतभगवंत साहेबजी**

प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी,

प.पू. दासस्वामीजी, प.पू. बापुस्वामीजी, प.पू. विज्ञानस्वामीजी,

प.पू. अश्विनभाई, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. शांतिभाई,

प.पू. भरतभाई एवं **प.पू. वशीभाई** की दिव्य निश्रा

तथा

अतिथि विशेष–विश्व प्रसिद्ध योगगुरु बाबा रामदेवजी महाराज

और

आचार्यश्री बालकृष्ण महाराज के सान्निध्य में

23 (शुक्र), 24 (शनि) एवं **25 (रवि-क्रिस्मस)**–तीन दिन

हमारे प्यारे **प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्राकट्य दिन** मनायेंगे...

साथ ही, अत्यंत हर्ष की बात है कि–

जैसे गुणातीत समाज के केन्द्रों में

गुणातीत स्वरूपों की प्रत्यक्ष हाज़िरी में ही उनकी मूर्ति स्थापित हुई है।

उन्हीं पद्चिन्हों पर चलते हुए,

संतभगवंत साहेबजी की **आंतरिक इच्छा, आज्ञा** के अनुरूप,

उनके पुनीत करकमलों द्वारा

दिल्ली मंदिर में परम पूज्य गुरुजी की

संगमरमर की मूर्ति प्रतिष्ठा करवा कर भक्ति अदा करने

पूज्य सुहृदस्वामीजी व दिल्ली मंदिर का **मुक्त समाज** तत्पर हुआ है।

तो, आइये हम सब इन ऐतिहासिक दिव्य क्षणों के साक्षी बन कर धन्य हों...

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III,

दिल्ली-110 052

आओ, प्रगट प्रभु से मिली दिव्य स्मृतियों का लेखनी से अनुभव करें...

जुलाई मास

प.पू. वशीभाई का प्राकट्योत्सव

6 जुलाई को **गुरुहरि काकाजी महाराज के भुलके** और **प.पू. गुरुजी के सखा समान प.पू. वशीभाई** का प्राकट्य दिन होता है, जो पवई में हमेशा 7 तारीख को मनाया जाता है और अबकी बार 9 तारीख को मनाने वाले थे। ऐसे मंगलकारी दिन पर प.पू. गुरुजी मुंबई जाने के लिये हमेशा इच्छुक होते हैं। एक बार तो सरप्राइज़ में वहाँ पहुँच गये थे।

इसी साल **28 अप्रैल को प.पू. गुरुजी के हार्ट में तीन स्टन्ट इन्सर्ट हुए थे, फिर भी करीब बीस दिन पहले प.पू. वशीभाई के प्राकट्य दिन में जाने की रट लगा ली।** करीब 25-30 हरिभक्तों के साथ **6 जुलाई** की दोपहर को फ्लाईट से मुंबई गये। एयरपोर्ट पर **प.पू. वशीभाई ने न केवल प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया, वरन् सभी मुक्तों को हार पहना कर स्वागत किया।** यहाँ से प.पू. गुरुजी, प.पू. वशीभाई एवं सेवक सीधा **पू. अनिलभाई माणेक** के घर **'घाटकोपर'** गये और कुछ मुक्त **पू. सोहिणी बहन** की पोती **पू. तन्वी** के 'रोके की रस्म' में शामिल होने गये। **पू. अनिलभाई के घर प.पू. वशीभाई को उनके प्रागट्य दिन निमित्त केक अर्पण किया।** देर रात को पू. सोहिणी बहन का पूरा परिवार प.पू. गुरुजी का दर्शन करने और आशीर्वाद लेने पू. अनिलभाई माणेक के घर आया।

अगले दिन सुबह दिल्ली और पंजाब के मिला कर करीब 35-40 मुक्त ट्रेन से मुंबई सेन्ट्रल पहुँचे। **जहाँ प.पू. भरतभाई ने सभी संतों-हरिभक्तों का और प.पू. माधुरी बहन व पू. कृपा बहन ने बहनों-भाभियों का स्वागत हार पहना कर किया।** यहाँ से सभी पू. अनिलभाई माणेक के घर पहुँचे। यूँ तकरीबन 70 मुक्तों को प.पू. गुरुजी लेकर गये। मुंबई जैसे शहर में इतने सारे लोगों को एक साथ आस-पास ठहराना बहुत ही कठिन काम है। लेकिन, **पू. अनिलभाई माणेक एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने परिवार सहित बहुत बढ़िया व्यवस्था करके न केवल प.पू. गुरुजी के प्रति, बल्कि संबंध वाले मुक्तों के प्रति भक्ति का दर्शन कराया।** नित्य कर्म से फ़ारिग होकर सभी ने दोपहर को पू. अनिलभाई माणेक के यहाँ दोपहर का भोजन किया। शाम 7 बजे पवई में आयोजित भजन संध्या के लिये प.पू. गुरुजी एवं सभी गये। मुक्तों ने ढोल की गूंज पर नाचते-आनंद करते हुए प.पू. गुरुजी का स्वागत किया। तत्पश्चात्

भजन संध्या आरंभ हुई। जिसमें गुणातीत ज्योत के **पू. इलेशभाई**, पवई के **पू. हितेनभाई**, जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी**, दिल्ली के **पू. डॉ. दिव्यांग, पू. यमन मिश्रा** एवं **पू. विश्वास** ने भजन प्रस्तुत करके वातावरण दिव्यता से भर दिया। भजन संध्या के बाद **प.पू. भरतभाई** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

*...भजन संध्या में गायक मंडल ने अद्‌भुत लाभ दिया... हमारे लिये सबसे बड़ा आनंद का दिन इसलिये है कि गुरुजी इतनी उम्र में इतने सारे भक्तों को लेकर पधारे हैं... **गुरुजी आनंद का स्वरुप हैं। उनके सान्निध्य में हमको हमेशा खुशी और आनंद ही मिलता है।** हम काकाजी के सान्निध्य में रहे। वे हमेशा कहते थे कि मैं आपको जो कहता हूँ, वो आप मानो। पर, श्रद्धा और विश्वास से मानने में हमारी कसर है। सच्चे हृदय से अगर हम वो मान लें, तो काम हो जायेगा... हमारी strong believe काम करती है...*

सुनृत (योगीगीता) में दासत्व के 4 मुद्दे दिये हैं।

पहला–इष्टदेव का दर्शन अच्छा लगे।

दूसरी–इष्टदेव के पास रहना अच्छा लगे।

तीसरा–उनकी क्रिया अच्छी लगे

और

चौथा–अपने इष्टदेव का स्वभाव अच्छा लगे।

*जो जिसे इष्टदेव मानता है, उसे उनका स्वभाव अच्छा लगना चाहिये। **गुरुजी का स्वभाव हम सबको अच्छा लगता है, इसलिए हमें आनंद आता है।** मैं सबका धन्यवाद करता हूँ कि ये बहुत कठिन बात हमें जँची। **हमें सत्पुरुष का स्वभाव जँचेगा, तो हमारा आनंद कभी जाएगा नहीं।** यह बहुत मायन्युट बात है। गुरुजी आज यहाँ विराजमान हैं, तो हम प्रार्थना करते हैं कि हमें हमेशा, हमेशा, हमेशा, हमेशा, हमेशा आपका स्वभाव अच्छा लगे और जब तक वो स्वभाव हमें जीव में अच्छा न लगे, तब तक आप वो दर्शन कराते रहना कि हमें स्वभाव जंचने लगे। तो, ऐसे गुरुजी के संबंध में आनंद आता है, उसका ये रीज़न है...*

बीलीव की जो बात है, तो काकाजी हमेशा पूछते थे कि भगवान तुम्हारे हृदय में... यूँ कह कर वाक्य छोड़ देते थे। तब हम उसे पूरा करते हुए बोलते थे–हृदय में है। काकाजी तुरंत कहते थे कि हृदय में हैं नहीं, हृदय में अखंड हैं। यदि सिर्फ 'हैं' बोलते, तो काकाजी नाराज़गी ग्रहण करते कि क्या बोल रहे हो? और फिर बुलवाते– भगवान हृदय में अखंड हैं। जब हम बोलते कि भगवान हमारे हृदय में अखंड हैं, तो

काकाजी तुरंत दूसरा वाक्य कहते– क्यों खंडित करते हो? ***खंडित करना मतलब–दूसरे का स्वभाव नहीं जँचता है। फलाने का ऐसा है, ढिकने का वैसा है। अभाव-अवगुण में जाते हैं, यह खंडित कहा जाता है। तो, ऐसे खंडित नहीं करना है और विश्वास रखना है कि प्रभु मेरे साथ हैं...***

ऐसा मानकर हम जीवन जीयेंगे, तो सही अर्थ में हमेशा आनंद में रहेंगे। बहुत व्रत या तप करना एक बात है, लेकिन यह मानना उच्च कक्षा की बात है। हमारी बुद्धि, चित्त, अहंकार यह मानने नहीं देगा। पर, हम मानेंगे तो 100 परसेंट काम होगा, ऐसा हमारे दिल में हमेशा बना रहे। भगवान हमारे साथ में अखंड, अखंड, अखंड, अखंड हैं ही। When you are selected by Supreme God, then why you worry. क्यों चिंता करते हो? तो, आज हम भगवान के चरणों में यही प्रार्थना करते हैं कि हम हमेशा ऐसे खुशी और आनंद में रहें और काकाजी ने जो ऐसी सरल बातें बताई हैं, वो हमारे जीवन में दृढ़ हो जाएँ। गुरुजी जनवरी में इतनी दौड़भाग करके मेरे बर्थ डे पर सरप्राइज में आए थे, तब मैंने उनसे प्रार्थना करी थी कि आप आये हैं, वो अच्छा तो लगता ही है, लेकिन आप इतना कष्ट उठाते हैं, वो ज़रा भी अच्छा नहीं लगता। आप आराम से आओ; सब प्रोग्राम अच्छी तरह करके आनंद करो, वो अच्छा लगता है। इस बार गुरुजी ने वो प्रार्थना सुनी और यहाँ आने का आराम से प्रोग्राम बनाया, इसके लिए गुरुजी के बहुत-बहुत आभारी हैं। हे महाराज, हे स्वामी, हे दयालु! हमारा भक्तिभाव, संप-सुहृदभाव, कुटुंबभाव वगैरह बढ़ता ही रहे यही प्रार्थना।

गुरुहरि काकाजी के साथ के स्वानुभव बताते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीष वर्षा की–

...भरतभाई ने जो बातें करीं, उसका मर्म यही है कि हम दिल की सच्चाई से मानें कि प्रभु मेरे और मैं प्रभु का। प्रभु के साथ का ये आपसी रिलेशन है। पर, प्रभु के साथ हमारा संबंध सिन्सीयरली खुल्ला नहीं है। क्योंकि हमारी अपनी कॉन्सियसनेस है कि प्रभु मेरे बारे में क्या सोचेंगे? पर, प्रभु कहाँ तक हमारी चोरी चलाते रहेंगे? वे तो इतने दयालु हैं कि हमारे मनसूबों या काम के बारे में हम उनसे कहें या ना कहें, पर वे खुद दौड़ कर चले आते हैं। तब हम भीतर में शर्मिन्दा भी होते हैं कि हम तो काकाजी के नहीं हुए, लेकिन काकाजी टोटली हमारे हैं। सामान्यतः शिष्य गुरु की मरज़ी के अनुसार वर्ते, तो गुरु की प्रसन्नता उस पर ढल जाती है। जबकि काकाजी के विषय में हरेक को अनुभव है कि हम भले ही उनकी रीति से न भी वर्ते हों, उनके होकर रहे या नहीं रहे, उनकी बात मानी या न मानी, लेकिन वे हमेशा हमारे होकर रहे। इतना ही नहीं, आज ***दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई***

जैसों के जोग में हमें ऐसा रख दिया कि हम उनकी ओर ध्यान दें या न दें, इनकी रीति से वर्तें या ना वर्तें, पर हमारी परवरिश करने में काकाजी की तरह ही रंचमात्र भी कमी रखते नहीं। उन्हीं की तरह हमारी प्रगति कराते रहते हैं। *लेकिन, जैसे कहते हैं न कि* ***हमें देख कर इन पुरुषों की आँखें नाच उठें-अलग सी चमक आ जाये, ऐसा हम वर्तते हो जायें, तो महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों को हमारे लिये कम श्रम करना पड़े।*** *इस बात को खूब समझें कि जैसे काकाजी शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के समक्ष खूब सरल रहे, यूँ हम ऐसे पुरुषों के आगे सरल रहें, यही आज के दिन माँगे और प्रभु हमें दें, ऐसी प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन के बाद, पवई मंदिर से जुड़े सत्संगी बच्चों के रिज़ल्ट बताते हुए **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया –

...गुरुजी के दिये आशीर्वाद बहुत माइने रखते हैं, जो आधा-एक घंटा मनन-चिंतन करने जैसा है। भक्ति क्या चीज़ है, उसके लिये काकाजी कहते थे कि लय और लीन होकर हम हमारे सत्पुरुष-गुरु की सेवा करें। काकाजी कहते थे – तुम्हें क्या मालूम कि लयलीन क्या होता है? मैं योगीजी महाराज के पास लयलीन हुआ हूँ। ऐसी भक्ति की वे हमसे आशा रखते हैं, यह हम में आये – ऐसा हमें आशीर्वाद दें।

सभा के बाद प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी पू. अनिलभाई माणेक के घर ठहरने गये।

8 जुलाई की सुबह नाश्ते के बाद **प.पू. गुरुजी** मुक्तों को साथ लेकर, नवी मुंबई-**कोपरखैरने** स्थित **पू. प्रमीतभाई संघवी** की फैक्ट्री गये। धुन-भजन करके सभी ने प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी यहाँ से **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** के घर **'अंधेरी'** (पश्चिम) के शिखर टॉवर्स गये। **पू. सुहृदस्वामीजी** कुछ मुक्तों के साथ **'दहिसर'** रहते **पू. डॉ. उपेन्द्रभाई पटेल** के घर पधरामनी करके, रात को पू. ओ.पी. अग्रवालजी के यहाँ पहुँचे। पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने शिखर टॉवर्स के हॉल में सबके लिये प्रसाद की व्यवस्था की थी। धुन-भजन के बाद सभी ने वहाँ प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी, संतों एवं कुछ मुक्तों के साथ यहीं ठहरे। अन्य मुक्तों को पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने अपने घर के आस-पास गुजराती भवन, महेश्वरी भवन इत्यादि में ठहराया।

9 जुलाई की सुबह **पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर** पर श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके, **प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी का 70वाँ जन्मदिन मनाया** और प्रसाद लेकर सभी अपने ठहरने के स्थान पर गये। शाम को पवई मंदिर में आयोजित **प.पू. वशीभाई के 70वें प्राकट्योत्सव** का लाभ लेने के लिये साढ़े पाँच बजे सब रवाना हुए।

करीब एक घंटे में प.पू. गुरुजी पवई पहुँचे। **फूलों के छत्र** (चादर) के नीचे चलते हुए **स्वरूपों-संतों ने सभा मंडप में प्रवेश किया।** इस दौरान **पू. हितेनभाई** ने **पू. हेमंतभाई मर्चंट** द्वारा रचित, **गुरुहरि काकाजी के कार्यों पर आधारित 'सनेडा'** गाकर स्वागत किया। जिससे पूरा पंडाल उत्साह से भर गया। उत्सव की पृष्ठभूमि पर लगी स्क्रीन पर **श्रीजी महाराज** सहित सभी **स्वरूपों** का दर्शन हो रहा था। उसी के आगे रखे गये एक बड़े **हंसाकार आसन** पर **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** विराजमान हुए। **पू. डॉ. दिव्यांग** ने 'पधारो सहजानंदजी हो, गुनाह करीने माफ़...' भजन से आवाहन किया। तत्पश्चात् **पू. हेमंतभाई मर्चंट, पू. ओ.पी. अग्रवालजी** और **पू. मिलापभाई** ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई द्वारा आयोजित बाल सभाओं से मिली सीख को **सत्संग के बच्चों** ने विडियो द्वारा प्रस्तुत करते हुए प्रार्थना की। भागवत और शिव पुराण के ज्ञानी स्वामिनारायण संप्रदाय के संत **पू. विजयप्रकाशस्वामीजी एवं पू. घनश्यामस्वामी** सरप्राइज़ में पधारे। तत्पश्चात् **पू. हेमंतभाई मर्चंट** द्वारा रचित प.पू. वशीभाई का नया भजन–

काकाजी के लाड़ले भुलका हो तुम, सब हैं तुम्हारे और सबके हो तुम,
वशीभाई एक पहेली हो तुम, सबके साथी-बेली हो तुम...

पू. डॉ. दिव्यांग, पू. हितेनभाई और **पू. विश्वास** ने प्रस्तुत किया। गुरुहरि काकाजी को जीवंत रखते हुए, प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई ने अपने संबंध में आने वालों का व्यावहारिक व आध्यात्मिक जतन इस प्रकार किया है कि मानो सबके जीवनप्राण बन गये हैं। **प.पू. वशीभाई के प्रति** ऐसी भावना दर्शाते हुए **देश-विदेश के मुक्तों ने विडियो द्वारा** संक्षिप्त में **अपनी भावनायें व्यक्त कीं। पू. डॉ. दिव्यांग** द्वारा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के भजन 'योगी का ही रूप आप मुक्तों में निहारें...' की प्रस्तुति के बाद **पू. श्रीनिवास त्रिपाठीजी** ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। **पू. विजयप्रकाशस्वामीजी** ने प्राकट्य की व्याख्या की और प.पू. वशीभाई के साथ मंचस्थ स्वरूपों, संतों, साधक भाइयों को समाविष्ट करते हुए **70 फुट** का **हार** अर्पण किया और फिर... **पू. विजयप्रकाशस्वामीजी** एवं **पू. घनश्यामस्वामी** ने भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विडियो द्वारा शिकागो से **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

...वशीभाई काकाजी के बहुत लाड़ले, सभी स्वरूपों के लाड़ले। काकाजी के जोग में आने के बाद उन्होंने बहुत सेवा की है... ***गुरुजी का वशीभाई के साथ बहुत प्रगाढ़ संबंध है।*** *वशीभाई ने गुरुजी की आयु देखते हुए मना किया था कि मैं आपके दर्शन के लिये दिल्ली आ जाऊँगा। लेकिन, गुरुजी की कैसी भावना कि करीब 70 हरिभक्तों को लेकर*

*पधारे... **हमारे वशीभाई की तबियत बहुत अच्छी रहे और 100 वर्ष तक उनका जन्मदिन ऐसे ही मनाते रहें। वशीभाई बहुत विनम्र और अनुशासित हैं। देर रात तक सत्संग का कार्य करते हैं...** आप हमारे लिये प्रार्थना करना कि आपकी तरह हम भी काकाजी को राज़ी करने लगे रहें। हर तरह से आपके साथ हमारा संबंध बढ़ता जाये... **वशीभाई का प्राकट्य दिन हम सभी साधक भाइयों का प्राकट्य दिन है।** उन्हें प्रार्थना है कि महापूजा में सभी के लिये प्रार्थना करना और अंतर से आशीर्वाद देते रहना... **किसी को फाइनन्स की ज़रूरत हो, तो पता भी नहीं चले ऐसे चुपचाप वशीभाई उनके लिये व्यवस्था कर देते हैं। औरंगाबाद के भक्त भी भरतभाई और वशीभाई के निर्देशन में आगे बढ़े हैं। शिकागो, पॅरिस, आस्ट्रेलिया इत्यादि के हरिभक्त भी उनसे प्रेम से जुड़े हुए हैं... वशीभाई को काल, कर्म और माया किसी भी चीज़ का बंधन नहीं है। भगवान के भक्त को राज़ी करें, तो काकाजी राज़ी हो जायें, यही वशीभाई की भावना है।** ऐसे गुणातीत स्वरूप हमें मिले हैं। वशीभाई जब भी धुन-भजन-प्रार्थना करते हैं, तो वो वाइब्रेशन हमें महसूस होती है। सभी मंडल की ओर से वशीभाई को हैपी बर्थ डे... सहजानंदस्वामी महाराज की जय, आज के आनंद की जय...*

प.पू. दिनकर अंकल के आशीर्वाद के बाद, जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी** ने 'घनश्याम तेरी बंसी पागल कर जाती है...' भजन प्रस्तुत किया।

प.पू. भरतभाई ने प.पू. वशीभाई की कई विशेषताओं को उजागर करते हुए आशीर्दान दिया—

*...ऐसे जो उत्सव होते हैं, उसमें आने की **तीन वजह** होती है।*

***पहली**—अरे, जाना पड़ेगा, यदि नहीं जायेंगे तो खराब लगेगा। सो, नहीं जाना हो तो भी जाना पड़ता है।*

***दूसरी**—अगर हम नहीं जायेंगे, तो लोग क्या कहेंगे? लोग कहेंगे—मूर्ख, वशीभाई के प्रागट्य दिन में नहीं गया? इसके लिए जाना पड़ता है।*

और

***तीसरी**—भाव है, जो हृदय से उत्पन्न होता है। उसमें एक खुशी होती है कि मैं वशीभाई के बर्थ डे में कैसे पहुँच जाऊँ!*

आप सब लोग हृदय के भाव से आये हैं, तो मैं सबको खूब-खूब धन्यवाद देता हूँ। आज हमारे अनूपजी, दिव्यांगभाई, घनश्यामस्वामी और विजयप्रकाशस्वामीजी ने भजनों से बहुत आनंद कराया। जब भी कोई ऐसा उत्सव होता है, तो उसमें ये सब बात-भाव याद रहता है। कथा-वार्ता बहुत कम याद रहती है... महाराज

ने तो कहा है कि अंत समय में ऐसी सभा का दर्शन याद आ गया, तो आप अक्षरधाम में पहुंच जाओगे...

9 दिन से वशीभाई के प्राकट्य का पर्व चल रहा है। सब एक साथ तो हो नहीं सकता, सो हर रोज़ शाम को 1 घंटा धुन और आधा-पौना घंटा अलग-अलग भक्त वशीभाई के गुणानुवाद गाते हैं... मैं यही कहता हूँ कि वशीभाई के ऐसे गुणों को आप ढूंढो, जो आप अपने आप में ला सको। ***वशीभाई ने हमें आशीर्वाद दिया और काम हो गया वो एक बात है। लेकिन वो जो भगवान में रहते हैं, भगवान को आगे रखकर करते हैं वो हमारे जीवन में आना चाहिए। वशीभाई कहते हैं कि मेरा कोई फॉलोवर नहीं है। मैं तो सबको अपने जैसा बनाना चाहता हूँ। काकाजी भी ऐसा बोलते थे। तो वशीभाई जो चाहते हैं, वो हमारे जीवन में आ जाये...***

वशीभाई के जीवन की मैं एक-दो बातें बताता हूँ। जो अपने जीवन में इम्बाइब करने जैसी हैं। ***पहली बात– वशीभाई को ज़रा भी आलस नहीं है।*** *हमारा सबसे बड़ा दोष देहाभिमान है। देह का लालन-पालन करना सबसे बड़ा दोष है और स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि देहाभिमान है, तो सब दोष आते हैं। एक ही दोष ऐसा है, जो सब दोषों को खींच कर लाता है। वशीभाई ऐसे भक्त, सेवक, साधु, संत या गुणातीत स्वरूप जो भी कहो वो हैं, पर उनमें देहाभिमान बिलकुल नहीं है।* ***ऑफिस से थके हुए आयेंगे और धुन चलती होगी तो तुरंत धुन-भजन-सत्संग में बैठ जायेंगे।*** *कभी-कभी तो ऐसा होता है कि मुंबई के बाहर से सुबह लौटेंगे; तो पवई भी नहीं आयेंगे, डायरेक्ट ऑफिस पहुँच जाते हैं और ऑफिस से शाम को कहीं महापूजा होती होगी, वहाँ पहुँच जाते हैं। नो रेस्ट, ज़रा भी आलस नहीं है। ये आलस हमें छोड़ना है।* ***जो काम निश्चित समय पर न करें, वो आलस है। ऐसा आलस छोड़ने के लिए हमें वशीभाई का ध्यान करना है।*** *वशीभाई से हमें वो प्राप्त करना है।*

दूसरी बात– वशीभाई बहुत बड़ी पोस्ट पर हैं–चार्टड एकाउंटेंट हैं, डायरेक्टर-फाइनेंस डायरेक्टर ऑफ धी कंपनी हैं। *इस पोस्ट पर दूसरा कोई आदमी होता, तो उसके पास करोड़ों रुपये होते। एक नहीं, अनंत फ्लेट होते। मगर वशीभाई ने कभी उस तरफ दृष्टि भी नहीं करी है। इसे कहते हैं नितिमत्ता-विवेक।* ***इतना कुछ सामने से मिलने पर भी उन्होंने कभी अपनी नीति को चलायमान नहीं होने दिया।*** *इतनी फेसेलिटी होते हुए भी उन्होंने अपनी नीति में कोई गड़बड़ नहीं होने दी।*

वशीभाई से हमें यह सीखना चाहिए कि हम कोई भी बिज़नेस करते हों, कार्य करते हों, कोई सेवा करते हों उसमें नीति अच्छी रखनी चाहिए। *अब इनकी उम्र 70 साल हुई, लेकिन उनके डायरेक्टर बोलते हैं कि वशी! यु बी हीयर इट्स इनफ। वी डॉन्ट*

वॉन्ट यु टु डू वर्क। यु जस्ट कम एण्ड सीट, धेट्स ऑल। तो वशीभाई की नीति यह बोल रही है और उन्हें ***ऑफिस में भी सब 'स्वामी' कह कर बुलाते हैं।***

तीसरी बात—वशीभाई किसी कम्फर्ट जोन में रहना नहीं चाहते। *ही ऑल्वेज ट्राई टु प्रोग्रेस। उन्हें ऐसा होता है कि आगे क्या प्रोग्रेस करनी है, कल क्या करना है? अभी आगे क्या करेंगे? उन्हें ऐसा नहीं होता कि अभी इतना तो कर दिया, अब आगे नहीं। उन्हें तो ऐसा होता है कि और भी आगे करो, और भी आगे जाओ। ऐसे संत यह बताते हैं।* ***संत के पास जायेंगे, तो वे हमेशा हमें आगे का रास्ता बतायेंगे... वशीभाई हमेशा आगे ले जाते हैं...*** *संत हमेशा एक स्टेप आगे का रास्ता बताते हैं।* ***गुरुजी के सान्निध्य में सब संत रहते हैं। गुरुजी उनका आलस छुड़वाते हैं। उन्हें कहते हैं तुम्हें ये करना है और अच्छी तरह से करना है। 19-20 नहीं चलता, गुणातीत ज्ञान में ये बहुत ज़रूरी है।*** *वशीभाई को ऐसा नहीं है कि मैंने सब सिद्धि प्राप्त कर ली, ये गुण हमें सीखना है।* ***स्वामिनारायण भगवान के गुणातीत ज्ञान में कहीं भी फुलस्टाप नहीं है। काकाजी हमेशा कहते थे—पूर्ण-अपूर्ण, पूर्ण-अपूर्ण, पूर्ण-अपूर्ण बाद में संपूर्ण।*** *तो, ऐसे संपूर्ण स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि मिले और उनके ऐसे गुणातीत स्वरूप संत मिले हैं, तो हम बहुत-बहुत धन्य हैं।*

आज मंच पर ***हंस*** *का चित्र दिखाया है।*

पहली बात—*हंस पृथ्वी पर भी चलता है और हवा में भी उड़ता है। इसलिए वशीभाई आकाश में भी उड़ते हैं और पृथ्वी पर भी चलते हैं।*

दूसरी बात—*हंस हमेशा मोती का चारा चुगता है। वशीभाई सच्चे मोती ही चुगते हैं। सच्ची बातें ही ग्रहण करते हैं, बाकी वो कुछ लेते नहीं हैं।*

तीसरी बात— *हंस हमेशा दूध और पानी को अलग कर देता है। ऐसे वशीभाई मायिक और अमायिक को एकदम अलग निकाल देते हैं। हमेशा प्रभु को राज़ी करने के प्रयास में लगे रहते हैं।*

हे वशीभाई, आपका आयुष्य बहुत-बहुत लंबा, स्वस्थ हो। करीब 112 भक्तों, युवकों ने आपके प्राकट्य निमित्त उपवास किया है, एक-एक घंटा धुन करी है। इनकी भावना यही है कि आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहे और आपके जैसे गुण प्राप्त कर पायें...

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया—

...सचमुच ये सब नज़ारा-आनंद गुरुजी का प्रताप है। अगर गुरुजी 100 मुक्तों को लेकर आकर ये उत्साह नहीं बढ़ाते, तो हम सादगी से जन्मदिन मना लेते। *विजयस्वामीजी-घनश्यामस्वामी को धन्यवाद कि ऐसे सरप्राइज़ दिया...*

*...**जहां सत्पुरुष होते हैं, वहां अक्षरधाम! जहां ऐसे संत होते हैं वहां अक्षरधाम!** हम कितने भाग्यशाली हैं कि मुफ़्त में अक्षरधाम हमारे यहां आ गया। काकाजी ने मुफ़्त में पवई निवासियों को अक्षरधाम दे दिया... **काकाजी ने हमें सिर्फ प्रेम दिया।** मैं छोटा बच्चा था, तो काकाजी बचूड़िया बोलते थे। गुरुजी मुझे चोंटू कहते हैं। मैं 1971 में विद्यानगर की बाल शिविर में पहली बार भरतभाई से मिला था। उस रिलेशनशिप को भी 52 साल हुए। ऐसे ही बापू, राजुभाई, हरखचंदभाई, अश्विनभाई, घनश्यामभाई, डॉ. मर्चेंट से परिचय हुआ...*

काकाजी ने सिखाया कि live total... जो भी पल जीओ, वो टोटली जीओ। वो गुरुजी जी रहे हैं... इस प्रकार कब जी सकते हैं, जब अपना कुछ नहीं रखा हो, खाली महाराज रखे हों कि मैं उनका इंस्ट्रुमेंट हूँ, मैं उनकी बंसी हूँ...

*हम तो संकल्प-भावना करते हैं कि हे महाराज! ये सब आये हैं, सबको आप तन, मन, धन और आत्मा से खूब-खूब सुखी करना और पप्पाजी कहते थे कि सबको अक्षरधाम की समाधि का सुख आसानी से मिले। तो, भगवान सिर्फ दुःख बांटने नहीं, सुख देने के लिये आये हैं। काकाजी तो कहते थे कि हम सुखीप्रसाद हैं। दुःखीप्रसाद मुंझवणलाल नहीं, सुखीप्रसाद आनंदीलाल हैं। **हे काकाजी! सबको आप सुखीप्रसाद आनंदीलाल होने का आशीर्वाद देना...***

अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीष वर्षा की—

*...एक मुहावरा है कि **भगवा में भगवान होते हैं। सारा हिन्दुस्तान भगवे कपड़े को नमन करता है, लेकिन पैंट और शर्ट पहने हुए व्यक्ति में भगवान का दर्शन हो, उसकी शुरुआत काकाजी ने वर्षों पहले करी और पप्पाजी ने एस्टेबलिश करी। हम सब खुशनसीब हैं कि आज उसी परंपरा के साहेबजी, वशीभाई, भरतभाई हमें विरासत में मिले हैं।** एक ही बात करनी है कि हम दिल से इनका स्वीकार करें, फॉर्मेलिटी से नहीं। जैसे भरतभाई ने दो-तीन चीजें बताईं कि यहाँ आये हैं, तो ऐसा रहेगा कि लाइन में भरतभाई-वशीभाई को पांव छूकर सब जय स्वामिनारायण करते हैं, वैसे हम भी कर लें। ऐसा नहीं, दिल की सच्चाई से करें। हम भले इनमें दिव्यता न भी मान पाते हों, लेकिन प्रार्थना करें कि हे प्रभु! मुझे भीतर में ये सच्चाई मनवा देना। काकाजी ने आशीर्वाद दिये हैं कि हमारी ऐसी प्रार्थना को हाथ-पैर आते हैं और आख़िर-आख़िर में वे कहते थे कि पंख आते हैं। उनके आशीर्वाद आज भी वैसे ही हैं, तो हम प्रार्थना करते रहें। फलस्वरूप जैसे वशी ने बात करी कि ये जो संबंध हुआ है, वो ही हमें अक्षरधाम मिल गया है। तो, शीघ्रातिशीघ्र इन स्वरूपों के साथ हमारा संबंध ऐसा दृढ़ हो जाये... ऐसे **संतों के साथ संबंध होगा, तो इनके द्वारा भगवद्स्वरुप संत के पास हमारे सारे काम हल***

हो जाते हैं। स्वामिनारायण की ये मूलभूत थियोरी है। *कल्याण तो अक्षरधाम में रह कर भी महाराज कर लेते, पर* ***जीतेजी यहीं पृथ्वी पर अक्षरधाम महसूस करते हुए रहना है और हमारे संबंध में जो कोई आये, उन्हें इसी राह पर अग्रसर करके ये विरासत आगे चलानी है।*** *काकाजी कहते थे— This powerhouse is constant & continuous. हमें कोई साधना नहीं करनी है।* ***एक ही डिसीप्लीन कि जैसे मैं काकाजी का हूँ, काकाजी के साथ मेरा संबंध है, वैसा अन्य सभी का है और यदि नहीं होगा, तो आगे होने वाला ही है। पप्पाजी*** *ने एक बार मल्कानी साहेब के फार्म पर बात करी थी कि* ***बाद में भी संबंधी के पैर पकड़ने ही हैं, तो अभी से क्यों न पकड़ें?*** *बस ये भावना रखते हुए दिव्यता, दिव्यता, दिव्यता देखें।* ***काकाजी मीन्स डीविनिटी!*** *सच-झूठ कुछ नहीं, भगवान के भक्त जो करें वो दिव्य है। दिव्य है इतना ही नहीं,* ***संबंध वाला जो करे वो सत्य है। दिव्य तो हम मान लेते हैं, लेकिन सत्य मानना, स्वीकारना और उसी रीति से चलना ही हमारी सच्ची साधना है। लगभग 80 प्रतिशत तो हम चल चुके हैं। लेकिन, हरिप्रसादस्वामीजी कह कर गये हैं कि तुम सब चल रहे हो, पर स्पीड नहीं है। तो, हमारी स्पीड बढ़े*** *— यही आज के दिन प्रार्थना...*

थोड़े ही समय पहले **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** की **निश्रा** में रहकर भगवान भजने हेतु **सात युवकों** ने **साधक की दीक्षा** ली। इन सभी को **प.पू. गुरुजी** ने अपने करकमलों से **'साधक का बॅच'** दिया। **'मैत्री सुमिरन पर्व'** और **'साधु पर्व'** के चिन्ह एवं अलग-अलग फूलों इत्यादि के आकार में काटे गये फलों का सुंदर गुलदस्ता **केक** के रूप में स्वरूपों को अर्पण किया गया। तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** को सभी ने हार और स्मृति भेंट अर्पण की। दिल्ली मंदिर के मुक्त समाज की ओर से **पू. आशिष** एवं **पू. अभिषेक** ने विशिष्ट **हार अर्पण** किया। दिल के आकार के इस हार में **प.पू. गुरुजी** व **प.पू. वशीभाई** की विभिन्न मूर्तियाँ लगाई थीं तथा प.पू. वशीभाई का स्वरूपों के साथ का संबंध और विशेषताओं को दर्शाते हुए लिखा था—

काकाजी का बचुड़िया, काकाजी का CA, पवई मंदिर की रीढ़ की हड्डी, वशीनी धुन-अंतर्नाद, Darling of Guruji, गुरुजी का चोंटु...

प.पू. गुरुजी ने ऑफिस बॅग दी, जिसके अंदर चश्मा, डायरी और दो फ्रेम्स में लगी गुरुहरि काकाजी और प.पू. भरतभाई की मूर्ति थी। **गुरुहरि काकाजी** की फ्रेम पर लिखा था— **गुणातीत समाजना सर्जक काकाजी... प.पू. भरतभाई** की फ्रेम पर लिखा था— **मन वगरना पुरुष भरतभाई...**

यूँ, प.पू. वशीभाई के प्राकट्योत्सव की अद्भुत स्मृतियाँ संजो कर सभी ने प्रसाद लिया।

10 जुलाई— प.पू. गुरुजी के साथ सत्संग के कई युवा और छोटे बच्चे मुंबई गये थे। प.पू. गुरुजी उन सभी को आनंद कराना चाहते थे। इसलिये आज 'ओपन' बस में बैठ कर मुंबई का नज़ारा देखते हुए, 'ताड़देव तीर्थ स्थान' का दर्शन करने जाने का कार्यक्रम प.पू. गुरुजी ने बनाया था। देर रात तक चले उत्सव की थकान के कारण रात को प.पू. गुरुजी की तबियत थोड़ी नरम हुई। सो, पू. आशीष, पू. अभिषेक व पू. डॉ. दिव्यांग ने उन्हें आराम करने की प्रार्थना की। लेकिन, **सत्पुरुषों को तो मुक्तों के साथ रहकर, उन्हें स्मृतियाँ देने से आराम मिलता है।** सो, पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर दोपहर का प्रसाद लेकर, प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई सबके साथ बांद्रा सी-लिंक पहुँचे। पवई मंदिर के **पू. मितेशभाई शाह** ने यहाँ से 'ओपन' बस की व्यवस्था की थी। उम्र और तबियत के कारण प.पू. गुरुजी को बस में नहीं बिठाना था, लेकिन सबको अनमोल स्मृति देने हेतु, **देहातीत प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई सभी के साथ 'ओपन' बस की छत पर जाकर बैठे।** सबको खुशी तो हुई, लेकिन भीतर में दर्द था कि **ओहो, ये सत्पुरुष हमारे लिये कितने सस्ते बने हैं...** हैरानी की बात तो यह थी कि **प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई मुंबई में रहते हुए भी पहली बार 'ओपन' बस में बैठे। यह एक यादगार पल थी कि गुरुहरि काकाजी के तीन लाड़ले-ज्योर्तिधर एक साथ सबको मूर्ति दे रहे थे।** एक छोटे-से बच्चे का दर्शन कराते हुए, प.पू. गुरुजी ने दो बार सी-लिंक का चक्कर लगवाया। फिर गाड़ी में बैठ कर प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई मुंबई सेन्ट्रल की ओर रवाना हुए और **पू. कनुभाई दवे** के दामाद **पू. हेतल कुमार** के घर पधरामणी करके **'मॅरीन ड्राईव'** पहुँचे। अन्य सभी बस से यहाँ पहुँचे। थोड़ी देर दरिया के किनारे बैठ कर, अल्पाहार करके ताड़देव गये। ताड़देव में 6/D सोनावाला बिल्डिंग्स के द्वार को फूलों से सजाया था। **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** एवं मुक्त स्वागत करने खड़े थे। **पू. प्रमीतभाई संघवी** द्वारा ख़ास उपलब्ध की गई **'मोबाईल स्टेयर लिफ्ट'** से सेवक प.पू. गुरुजी को चौथी मंज़िल पर ले गये। प.पू. भरतभाई ने पूजन किया। 'आत्मीयता' का मुख्य स्थल फूलों से सजा था। **प.पू. वशीभाई** ने बताया कि **गुरुहरि काकाजी के अंतर्धान होने के बाद पहली बार ऐसी डॅकोरेशन की गई है।** चार मंज़िल न चढ़ पाने के कारण प.पू. गुरुजी भी कई सालों के बाद यहाँ आये।

करीब सवा सौ मुक्त दर्शन, सेवा, समागम के लिये यहाँ एकत्र हुए थे। नये आये मुक्तों को ताड़देव की महत्ता और इतिहास बताते हुए **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** ने आपस में गोष्ठी करते हुए निम्न प्रसंग बताये—

प.पू. भरतभाई – *ताड़देव मंदिर की बहुत सारी स्मृतियाँ यहाँ आने पर सहज में उभर आती हैं।* ***काकाजी इसी सोफे पर 40 साल तक बैठे हैं। शास्त्रीजी महाराज इसी सोफे पर बैठे थे और आशीर्वाद लिखा था – चार बातें जीव का जीवन है। उपासना, आज्ञा, एकांतिक से प्रीति और भगवदी के साथ सुहृदभाव।*** *पत्र संजीवनी पुस्तक के पहले पेज पर यह बात छपी है।*

काकाजी इस सोफे को कभी बदलने के लिये तैयार नहीं होते थे। *1982 में काकाजी ने बीमारी ग्रहण करी। तब हमने सोफा बदला ताकि बैठने के लिए थोड़ी अच्छी सुविधा हो जाये। थोड़े दिन बैठने के बाद बोले कि मुझे तो वही पुराना वाला सोफा चाहिये। ये प्रसादी का सोफा है।* ***यहाँ पर गुरुजी की बहुत सारी स्मृतियां हैं... काकाजी कोई पुस्तक लिखते, तो गुरुजी को बुलाते थे... गुरुजी के लिये तो यह मायका है, ऐसा बोला जाता है।*** *काकाजी को भी गुरुजी के प्रति इतना प्रेम और गुरुजी को भी काकाजी के प्रति इतना ही प्रेम। उस समय में फॅक्स वगैरह नहीं था। मगर गुरुजी दिल्ली से इस तरह चिट्ठी भेजते कि दूसरे दिन 11 बजे यहाँ पहुँच जाती थी। काकाजी उसे खूब प्रेम से पढ़ते थे... बहुत आनंद कराते थे।* ***हम लोग यहाँ 1972 से 2003 तक 30 साल रहे।*** *2003 में पवई में मंदिर बनने के बाद वहाँ चले गये।* ***यहाँ पर काकाजी भी रहते थे और हम सब अड़बंगे जैसे रहते थे। कोई कहीं भी सो जाता था। मगर अरुणभाई लॉबी में ही सोते थे। जैसे ही घंटी बजती तो वे उठ जाते थे।***

ये ताड़देव बहुत बढ़िया तीर्थ है। कितनी भी असुविधा या तकलीफ़ हुई होगी, तो भी ताड़देव अच्छा लगता है। *काकाजी अपने कमरे में बैड पर और गुरुजी कई बार वहीं नीचे सोते थे, स्वामीजी भी कई बार वहाँ नीचे सोये हैं। पप्पाजी बगल के कमरे में सोते थे। ऐसी बहुत सारी प्रसादी और स्मृतियाँ यहाँ से जुड़ी हैं।* ***काकाजी ने यहाँ जितनी धुन करी है, इतनी शायद ही संप्रदाय के इतिहास में किसी ने कहीं करी होगी!*** *सुबह 6-7 बजे से लेकर रात 10.30-11.00 बजे आराम में जाते, तब तक में कम से कम 7-8 बार धुन करते थे और वो अनलिमिटेड चलती थी। वो धुन 5 मिनिट भी चलती, 10 मिनिट भी, आधा घंटा या एक घंटा भी चलती थी। कई बार दो घंटे भी चलती।* ***सामने कोई भी बैठा हो, मगर काकाजी अपनी धुन में मस्त रहते।*** *जिस फोर्स से सुबह धुन करते, उतनी ही फोर्स, उत्साह, उमंग और महिमा से रात को सोने जाने तक करते रहते।* ***काकाजी जब आरती के समय धुन करते थे, तो धुन की आवाज़ नीचे से गुज़रने वाले को भी सुनाई देती।*** *उस धुन का प्रभाव यहाँ की मिट्टी में भी है।* ***यहाँ की रजकण में स्वामिनारायण मंत्र की वाइब्रेशन्स हैं। यहाँ कोई भी आता है, वो वाइब्रेशन्स फील करता है।***

*...**गुरुजी बहुत सालों के बाद यहाँ पधारे हैं। इस तीर्थ की पुरानी स्मृतियों को रिवाइज़ कर दिया है।** यहाँ ये जो भाई-भक्त रहते हैं, वे ताड़देव को बहुत अच्छी तरह संभालते हैं। नियमित आरती-पूजा करते हैं। बुधवार की सभा में वशीभाई, अश्विनभाई वगैरह आकर रिजनरेट करते हैं। सबको धन्यवाद करते हैं और गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है कि खूब-खूब आशीर्वाद देना।*

प.पू. वशीभाई— *ये अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति शास्त्रीजी महाराज ने काकाजी को दी थी। जब पूजन करके **शास्त्रीजी महाराज** ने मूर्ति यहाँ रखी, तो वे बोले—*

दादु-दादु! सारे ब्रह्मांड का भार यहाँ रख दिया...

***प्रसादी की ये मूर्ति काकाजी के समय से आज तक है।** ये हिस्टोरिकल बातें हैं। सोफे की हिस्टोरिकल बात भरतभाई ने बताई। एक और हिस्टोरिकल बात यह कि **जब 39 संत संस्था से विमुख हुए, तब वे सीधा यहीं पर आये थे। यहाँ से गुणातीत समाज की गंगोत्री बही और आज 50 साल में कहाँ-कहाँ बही?** बेप्स संस्था बनाने का डिसीज़न, 51 हज़ार की सेवा जो काकाजी-कांतिकाका ने करी और चंदन अर्चा हुई वो भी यहीं से, विमुख का डिसीज़न भी यहीं से और 3 फरवरी के साक्षात्कार के बाद काकाजी ने जो कथावार्ता की, वो भी यहीं से। ये बहुत-बहुत-बहुत प्रसादी का सोफा है। **All big big big decision काकाजी ने इस सोफे पर बैठ कर किये...** काकाजी के कमरे और पलंग की बात करूँ, तो अमेरिका के शंकरभाई जब पहली बार यहाँ आये तो उन्होंने पूछा कि काकाजी कहाँ रहते थे? उन्हें बताया कि यहाँ पर रहते थे। **तो बोले—यहीं पर!** उन्हें लगा कि कोई बहुत बड़ा महल होगा? कोई बहुत बड़ा आलीशान विला होगा? **गढड़ा में महाराज की अक्षर ओरड़ी इसी साइज़ की है।** महाराज की हाइट सवा चौसठ थी और काकाजी की हाइट भी सवा चौसठ थी। **काकाजी ने जो चमत्कार किये, उसकी साक्षी ये दीवारें, सोफा और ये मूर्तियाँ हैं...** इसी सोफे पर काकाजी-पप्पाजी दोनों बैठे थे, वो फोटो भी है।*

प.पू. गुरुजी— ***स्वामीजी** ने इस सोफे के लिए एक बार कहा था कि **ये सोफा मुझे दे दो, मैं तुम्हें 10 लाख रुपये की सेवा दूंगा।***

प.पू. भरतभाई— ***स्वामीजी** ने यहाँ तक कहा था कि **इस गद्दी पर कोई बैठे नहीं। इस पर काकाजी ने 40 साल तक भजन किया है।***

प.पू. वशीभाई— ***काकाजी धाम में गये, तो पप्पाजी तुरंत उभराट से आये और बोले भी—भाई, तुमने बहुत जल्दबाज़ी की। 2014 में 80 वर्ष की आयु में स्वामीजी भी चार मंज़िल चढ़ कर आये थे।***

गुरुजी जिस सोफे पर बैठे हैं, वो भी प्रसादी का है। पप्पाजी यहां बैठते थे। *उनके हाथ बहुत लम्बे थे, तो वे खिड़की पर हाथ रखते थे। नीचे से भक्तों को हाथ दिखाई देते, तो वे समझ जाते थे कि पप्पाजी ऊपर बैठे हैं। तब काकाजी ने एक संकेत भी बनाया था। आज की तरह मोबाइल फोन नहीं थे, तो नीचे से कम्युनिकेशन कैसे करें? इसलिये नीचे मानो कोई सामान लेकर आये या कोई मॅसेज देना हो, तो ऊपर या नीचे से ताली मार कर संकेत देते थे। ये सब प्रसादी का माहौल है...*

प.पू. गुरुजी – *पप्पाजी अकसर यहीं बैठते थे। पप्पाजी जब विद्यानगर चले गये, उसके बाद काकाजी अपने सोफे से उठ कर सुबह यहाँ बैठते थे। तभी* ***विमुख प्रकरण हुआ था, तो कोई यहाँ आता-जाता नहीं था। तो काकाजी ध्यान रखते थे कि कौन आया-कौन गया है?***

प.पू. वशीभाई – प्रसादी की सब चीज़ें वेल्यूलेस हैं।

प.पू. गुरुजी – *ऊपर की छत पर एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक पानी की टंकियाँ हैं। यहाँ इतने सारे भक्त और बहनें रहती थीं कि बाथरूम में तो कपड़े धो नहीं सकते थे। सो,* ***बहनें कपड़े छत पर ले जाती थीं और टंकी से पानी निकाल-निकाल कर कपड़े धोती थीं।*** *यहाँ कितनी सफ़ाई और शिविर हुई हैं। रोज़ शाम को काकाजी या पप्पाजी वॉक करने जाते थे...*
बापा कपोलवाड़ी में आते थे, तब शाम छः बजे से धुन, भजन, सभा होती थी। ***हरिप्रसादस्वामी प्रभुदासभाई और महंतस्वामी वीनू भगत के रूप में थे,*** *वे बापा की ओर से पत्र वगैरह लिखने की सेवा में रहते थे।* ***बापा उनसे कहते कि रात को नौ बजे के बाद दादुभाई-बाबुभाई घर जायेंगे, तो उनके पास कथा सुनने जाना। इनके लिये काकाजी-पप्पाजी दोबारा कथा करते। डॉ. स्वामी भी उनके साथ आते थे...***

प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई ने इन स्मृतियों में सबको ऐसा विलीन कर दिया कि ऐसा होता था कि ये बातें ख़तम ही न हों। लेकिन, प.पू. गुरुजी की आयु एवं समय की मर्यादा को देखते हुए, **हारविधि** व **केक अर्पण** के बाद प्रसाद लेकर सब अंधेरी गये।

11 जुलाई की दोपहर को पू. ओ.पी. अग्रवालजी के यहाँ प्रसाद लेकर कुछ मुक्त ट्रेन से दिल्ली लौटने के लिये मुंबई सेन्ट्रल गये। कई दिनों की लगातार थकान होने के बावजूद **प.पू. वशीभाई** संतों-मुक्तों को विदा करने के लिये ख़ास स्टेशन आये। दूसरी ओर – प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ फ्लाईट से दिल्ली जाने वाले थे, तो **प.पू. भरतभाई** उन्हें विदा करने एयरपोर्ट पहुँचे। यूँ, ताड़देव और पवई की अविस्मरणीय पलों के ख़जाने के साथ सब दिल्ली लौटे।

6 जुलाई– मुंबई में पू. अनिलभाई माणेक के घर रात्रि को
प.पू. वशीभाई के प्राकट्य दिन पर केक अर्पण

7 जुलाई– सुबह पू. अनिलभाई माणेक के घर पूजा-धुन...

7 जुलाई– सायं पवई मंदिर में 'भजन संध्या'

नवी मुंबई– कोपरखैरने... पू. प्रमीतभाई संघवी की फॅक्ट्री पर पधरामणी...

पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी का 70वां जन्मदिन मनाया...

9 जुलाई– पवई मंदिर में प.पू. बशीभाई का 70वां प्राकट्योत्सव...

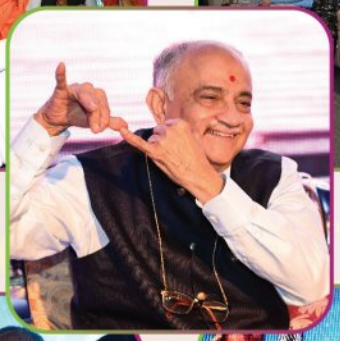

10 जुलाई– सुबह 'ओपन' बस में बैठ कर मुक्तों को आनंद कराया - अद्भुत स्मृतियाँ दीं...

'मॅरिन ड्राईव' को पावन किया...

10 जुलाई– सायं 'ताड़देव तीर्थ' के दर्शनार्थ गये...

गुरुपूर्णिमा...

13 जुलाई—गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन गुरुपूजन निमित्त सभी **'कल्पवृक्ष'** हॉल में एकत्र हुए। श्री ठाकुरजी के सिंहासन की पृष्ठभूमि पर, लाल गुलाब की पंखुड़ियों के डिज़ाइन वाले फ्लेक्स लगाये थे। जिसमें गुरुहरि काकाजी की अलग-अलग मूर्तियाँ प्रिंट की थीं। इसी प्रकार, प.पू. गुरुजी के सोफे के पीछे सफ़ेद फ्लेक्स पर बीचोंबीच लाल गुलाब की बड़ी पंखुड़ी में गुरुहरि काकाजी की मूर्ति लगाई थी और आस-पास गुरुहरि योगीजी महाराज की विभिन्न मूर्तियाँ छोटी पंखुड़ियों में प्रिंट करके लगाई थीं।

इस बार की गुरुपूर्णिमा ऐतिहासिक बनी। जैसे कि पूर्व पत्रिका में विवरण दिया था कि **28 अप्रैल** को मेदान्ता अस्पताल में जब **प.पू. गुरुजी** की **एन्ज्योप्लास्टी** हुई, उसी दौरान पू. आशिष शाह ने आर्टिस्ट **पू. अर्जुन वाजपेयी** द्वारा तैयार किये जा रहे, प.पू. गुरुजी के मॉडल के निरीक्षण के लिये गुणातीत समाज के केन्द्रों से जानकार संतों-मुक्तों को आंमत्रित किया था। सबके द्वारा बताये गये सुझावों के अनुसार सुहृदभाव से मॉडल तैयार हुआ। कई वर्षों से दिल्ली मंदिर में होते आये उत्सवों में जिन्होंने भक्तिपूर्ण हृदय से अपनी कला से योगदान दिया है, गुरुहरि काकाजी व प.पू. गुरुजी के ऐसे कृपापात्र **पू. अमृतभाई पटेल** की निगरानी में मॉडल से **फाइबर** और **प्लास्टर ऑफ पॅरिस** की दो मूर्तियाँ बनाई गईं और उन्हीं की व **पू. परछाईं दीदी** की देखरेख में जयपुर के **आर्टिस्ट पू. कमल शर्माजी** ने पी.ओ.पी. की व सालों से मंदिर के श्री ठाकुरजी की मूर्ति पेइन्ट करते आ रहे **आर्टिस्ट पू. योगेश शर्माजी** की सुपुत्री **आर्टिस्ट पू. दीक्षा** ने फाइबर की मूर्ति को पेइन्ट करके हुबहू प.पू. गुरुजी की प्रतिकृति बना दी। इस मंगल दिन सायं अक्षरज्योति के **'नैमिषारण्य हॉल'** में पी.ओ.पी. की मूर्ति प्रतिष्ठित करने का कार्यक्रम था। सो, **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **पू. मैत्रीस्वामी** द्वारा की जा रही महापूजा में, श्री ठाकुरजी की मूर्ति के नीचे सुंदर आसन पर प.पू. गुरुजी की मूर्ति स्थापित की गई। महापूजा संपन्न होने के बाद, मुंबई के **पू. दीपक अग्रवाल** एवं पंजाब सबद्दी कलां के **पू. चेतन भार्गवजी** ने सभी की ओर से **प.पू. गुरुजी** को **हार अर्पण** किया। पू. परिमलभाई आचार्य-पू. सुवासभाभी की सुपुत्री **पू. ऋचा** का **18वाँ जन्मदिन** था। प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं मुक्त समाज के साथ मनाने के लिये वह दुबई से ख़ास आई थी। सो, **प.पू. दीदी** के प्रति

बहनों और भाभियों की भावना व्यक्त करते हुए **पू. ऋचा** ने उन्हें हार अर्पण किया। पंजाब-जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी** द्वारा भजन प्रस्तुत किये जाने के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया—

*...आज गुरुपूर्णिमा का मंगलकारी दिन, गुरुपूजन करने का दिन! आज के दिन सब अपने-अपने गुरु का पूजन करते हैं। ऐसा मानते हैं कि हमें गुणवान गुरु मिले हैं। स्वामिनारायण संप्रदाय में महाराज गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लेकर आए। आदि गुरु गुणातीत-व्यासजी बोले जाते हैं। व्यासजी-गुणातीत स्वरूप, संत का पूजन गुरुपूर्णिमा की सार्थकता है। संत की परिभाषा एक बार समझाई थी—**'स-अंत! अंत तक जो साथ रहें वो संत!' काकाजी ऐसे परम भागवत संत थे। आज भी जिन-जिनको काकाजी का परिचय है या दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई जैसे संतों द्वारा काकाजी से जुड़े हुए हैं, उन्हें यह प्रतीति होती होगी कि वे जब भी पुकारें, तो काकाजी हमेशा उनके साथ ही हैं।** काकाजी तो स्वयं कहते भी थे कि हृदय में जहां धबक-धबक-धबक होता है, वहां भगवान अखंड रखे हुए साधु अखंड विराजमान हैं। फिर ये भी कहते थे-चेतावनी भी देते थे कि जब साधु अखंडता से विराजमान हैं, तो आप इन्हें क्यों खंडित करते हो? खंडित करना मानो मूर्ति टूट जाती है, ऐसा नहीं। लेकिन, अपनी स्मृति में से पलभर के लिए भी क्यों भूलते हो? अन्य किसी क्रिया में क्यों चले जाते हो? गुरुपूर्णिमा पर आज सबसे पहले काकाजी से मांगना है कि **हे काकाजी! हमारी घड़ाई ऐसी कर दो कि आपको भूल कर हम कहीं इधर-उधर भटकते न रहें।** इसमें हमारी भलाई है। इन्हें न भूल कर हम जो भी कुछ करेंगे, वो हमारी चेतना के श्रेय के लिए बनता रहेगा। तो, गुरुपूर्णिमा पर नई कोई अपेक्षा नहीं रखनी। इससे हमें क्या फ़ायदा है? तो, गुरु का मतलब एक बार समझाया था कि अंधकार में से जो हमें उजाले में ले जाए, उजाले में स्थित कर दे। मतलब प्रभु के प्रकाश में हम स्थिर हो जायें। फलस्वरूप हमेशा सुरक्षित रहते हुए निर्भय और निश्चिंत रहें। पप्पाजी जैसे कहते थे, काकाजी जैसे समझाते थे कि भीतर में हम विराजमान हैं, तो भीतर में तुम्हें उद्वेग क्यों होता है? हम क्यों डर जाते हैं? हमेशा प्रभु के बल से निर्भय और निश्चिंत रहें, यही काकाजी के हम पर सच्ची गुरुपूर्णिमा के आशीर्वाद हैं। वो आशीर्वाद प्राप्त करने हमारी निगाह सतत इनकी तरफ रखें। फलस्वरूप हमारा जीवन संगीत सुमधुर बनता रहेगा। हम खुद को तो आनंद में रखें, लेकिन हमारी संगत-संपर्क में जो रहे उसे भी वो आनंद*

मिले। इतना ही नहीं, वो स्वयं भी दूसरों को बांट पाये, ऐसा सुनहरा योग फिलहाल है और आगे भी है। गुरु तो अंत तक साथ में रहने वाले हैं, उसकी ना नहीं है। लेकिन, ***गुरु के प्रति जो आस्था-निष्ठा हो और जब वे गुरु चोला बदल कर दूसरे चोले में जायें, तब उसके साथ उसी भाव से जुड़े जायें। यदि ना जुड़ पायें, तो वहां हमारी कोई कसर रह जायेगी।*** *काकाजी ने एक बार बताया था कि अगर तुम अपने गुरु के साथ 65-70 परसेंट जुड़ गये होंगे, तो आगे आने वाले गुरु से जुड़ने में तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होगी। हमें इस बारे में सोचने की ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि हमें ऐसे गुरु मिले हैं कि जो हमेशा हमारे साथ ही रहेंगे। आज के गुरुपूर्णिमा के दिन नई कोई बात नहीं करनी है। हम सदा सनाथ अखंड सौभाग्यवान सेवक हैं, तो गुरु को धारकर इनका कार्य आगे बढ़ायें। इनका कार्य क्या? काकाजी ने एक बार बताया था* ***अगर हम अपने साथी-मुक्तों के साथ सच्चे दिल से सुहृदभाव से रहेंगे, तो प्रभु की मूर्ति हमारे भीतर अखंड बस जायेगी।*** *हमें जहाँ-जहाँ काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी ने रखा है, उस समाज के अंदर इन स्वरुपों के संबंध से ओतप्रोत होकर एक-दूसरे के सुहृद बनें, यही प्रार्थना है...*

तत्पश्चात् पंक्तिबद्ध होकर संतों-भाइयों ने **प.पू. गुरुजी** का और बहनों-भाभियों ने **प.पू. दीदी** का पूजन करके स्वयं को धन्य किया। गुरुपूर्णिमा का महाप्रसाद लेने के बाद, शाम को मंदिर से अक्षरज्योति तक निकलने वाली प.पू. गुरुजी की मूर्ति की शोभायात्रा की तैयारियों में सेवक जुट गये।

सायं करीब **6:30 बजे** मंदिर के प्रांगण से शोभायात्रा आरंभ हुई। फूलों से सुसज्जित रथ पर **श्री अक्षपुरुषोत्तम महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज** के चरणों में **प.पू. गुरुजी की फाइबर** की **मूर्ति** विराजित की थी। संतगण रथ चला रहे थे। बेंड-बाजे की धुन और ढोल पर सब इतना नाचे कि करीब दो घंटे में अक्षरज्योति के द्वार पर पहुँचे।

यहाँ नैमिषारण्य हॉल में फूलों से सुसज्जित सुंदर आसन पर पधराई प.पू. गुरुजी की मूर्ति एकदम जीवंत लग रही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वे साक्षात् बिराजे हैं। धुन एवं मंत्रपुष्पांजलि करके **पू. सुहृदस्वामीजी** एवं **पू. आशिष** ने मूर्ति को हार अर्पण किया। **पू. अक्षरस्वामी** एवं **पू. मैत्रीस्वामी** सहित उपस्थित मुक्तों ने आरती की। प.पू. गुरुजी की सर्वप्रथम मूर्ति स्थापना के उपलक्ष्य में **पू. गर्ग साहेब, पू. श्यामलालजी, पू. पुनीत गोयलजी** एवं **पू. आशिष शाह** ने अपने भाव प्रकट किये।

मूर्ति को दैवत प्रदान करते हुए प.पू. गुरुजी ने आशीष वर्षा की—

प.पू. गुरुजी के 'क्ले मॉडल' का शुभारंभ...

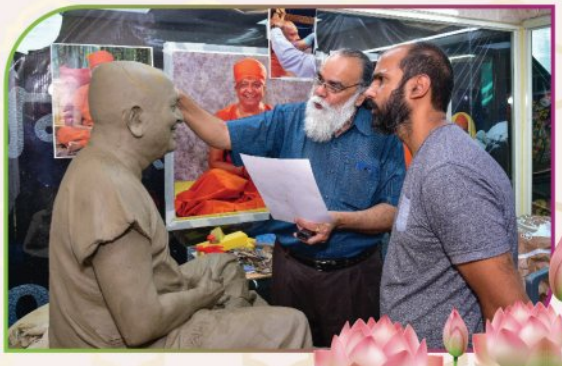

‘क्ले मॉडल’ के संयोग से गुणातीत कुनबे का दिव्य मिलन...

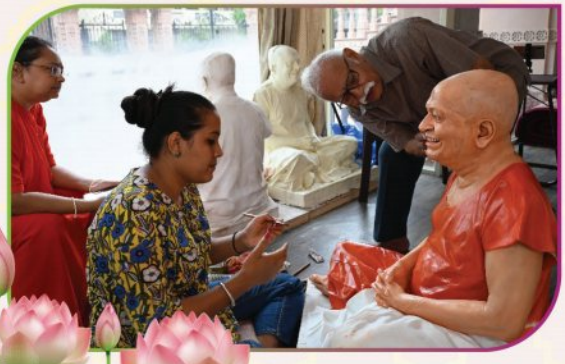

13 जुलाई– ऐतिहासिक गुरुपूर्णिमा...

प.पू. गुरुजी की सर्वप्रथम मूर्ति निमित्त आनंदविभोर मुक्त समाज...

मूर्ति प्रतिष्ठा निमित्त शोभायात्रा...

मूर्ति के आगमन की प्रतीक्षा में...

गुरुहरि काकाजी को करोड़ों धन्यवाद गुरुजी हमें भेंट दिये...

अंत तक जो साथ रहेंगे, ऐसे संत को शत्-शत् नमन...

काकाजी की स्मृति के साथ इस मूर्ति के पास
जिस मनोरथ से धुन करें, वो काकाजी सिद्ध करें... —प.पू. गुरुजी

हृदय मंदिरीये कायम बिराजो
भुलकांनी छे याचना...

शिल्पी अर्जुन ने कहा था कि 96 प्रतिशत यह मूर्ति लाइव फिगर से रिज़ेम्बल करती है। वो शिल्पी की कलाकारी थी। मूर्ति तो हूबहू बन सकती है। पर, ***मूर्ति को लाइव रखना, वो जिम्मेदारी पुजारी की होती है।*** *पुजारी जितने भक्तिभाव से, जितने अपने शुद्ध वर्तन से पूजन करता रहे, इतनी मूर्ति लाइव रहेगी। तो, ये जिम्मेदारी अब इन बहनों की है। मैं क्या अपेक्षा रखता हूँ कि मूर्ति तो हूबहू बनी है, लेकिन ये ऐसी लाइव रहे कि* ***काकाजी की स्मृति के साथ इस मूर्ति के पास बैठ कर पंद्रह मिनिट भी कोई स्वामिनारायण धुन करे****... फिर से कहता हूँ काकाजी की स्मृति के साथ... जिन्होंने काकाजी को नहीं देखा है, वो मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जो मूर्ति है, इनकी स्मृति के साथ इस मूर्ति के पास पंद्रह मिनिट* ***जिस मनोरथ से धुन करे, वो काकाजी सिद्ध करें****— यही प्रार्थना है।*

अक्षरज्योति से सब मंदिर गये और रात को प्रसाद लिया।

पूज्य गर्ग साहेब का हृदयभाव ग्रहण करके प.पू. गुरुजी ने 'मसूरी' को पावन किया और फिर... ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के प्रति भक्ति अदा करने हरिधाम गये...

सन् 2012 से **पू. आई.एम. गर्ग साहेब,** अपने सुपुत्र **पू. गगनजी, पू. गौरवजी** एवं परिवार सहित **प.पू. गुरुजी** एवं सत्संग समाज से ऐसे जुड़े हैं कि सत्संग उनके जीवन में बस गया है। इसलिये, अपने **'रॉयल आर्चिड रिसोर्ट'** का विस्तार करने हेतु बगल में शेष पड़ी भूमि का पूजन उन्होंने 2016 में प.पू. गुरुजी से कराया था। अब वह ब्लॉक बन कर तैयार हो गया, तो जनवरी से वे प.पू. गुरुजी से आग्रह कर रहे थे कि इसका उद्घाटन करने आने का जल्द कार्यक्रम बनायें। **आख़िर, 21 से 26 जुलाई 2022** करीब ढाई सौ मुक्तों को लेकर मसूरी जाने का तय हुआ।

मसूरी में होने वाली **'ब्रह्मविद्या सत्संग शिविर'** की पूर्वतैयारी के लिये एक दिन पहले **20 जुलाई** की सुबह **कुछ मुक्त** वहाँ पहुँच गये। **पू. गौरव भइया** एवं उनके माता-पिता **पू. गर्ग साहेब, पू. इंदू आंटी** और पत्नी **पू. सुचिका भाभी** भी पहुँचे।

21 जुलाई दोपहर की फ्लाईट से **प.पू. गुरुजी**, पवई के **पू. राजुभाई**, संतों-सेवकों, **प.पू. दीदी**, पवई की **पू. कृपा बहन** एवं कुछ बहनों-मुक्तों के साथ और अन्य कुछ मुक्त शताब्दी ट्रेन से देहरादून पहुँच कर, सायं तकरीबन 5:30 बजे तक मसूरी रिसोर्ट आ गये। यहाँ के नये ब्लॉक के **स्वागत कक्ष में पू. गौरव भइया ने फूलों से सजावट कराई थी। पू. गर्ग साहेब ने प.पू. गुरुजी से रिबन कटवा कर उद्घाटन कराया।** प्रवेश करने के बाद **पू. गौरव भइया ने प.पू. गुरुजी को और पू. सुचिका भाभी ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया।** तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी व सभी रिसोर्ट के पुराने ब्लॉक की 7वीं मंज़िल पर गये। यहाँ प.पू. गुरुजी के ठहरने के कमरे के बाहर बैठक बनी हुई है, जिसे **'तारा हॉल'** कहते हैं। शाम को यहीं छोटी सभा में **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** और **पू. गर्ग साहेब** ने बात की और वर्षों पहले **गुरुहरि काकाजी** से पाई मसूरी की स्मृतियाँ करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीष दी—

*...मैंने शायद रास्ते में बात करी थी या दिमाग में घूम रहा था कि **सबसे पहले काकाजी मुझे मसूरी ले आये थे। इनका मक़सद अलग था, पर वो उस समय पकड़ नहीं पाया।** आज तो हम किसी अलग रास्ते से आये, पर उस समय देहरादून से आते हुए काकाजी मुझे सब दिखाते हुए आये कि ये मिलट्री-एयरफोर्स की वर्कशाप वगैरह है। फिर हम ऊपर मसूरी आये, तो सेवोय होटल के पास से गुज़रते हुए जलेबी टाइप रास्ता दिखाया। यहाँ से और आगे गये, तो मुझसे पूछा कि वो जलेबी वाला रास्ता नज़र आता है? मैंने कहा कि वो सब अब ढक गया, नज़र नहीं आता। तब **काकाजी** ने कहा—**जैसे मसूरी आये, तो नीचे देहरादून का पता ही नहीं लगता। ऐसे ही हमें भी ऊंचे चले जाना है। इतनी हाइट पर चले जाओ कि मुक्तों के, भक्तों के स्वभाव-प्रकृति कुछ नज़र ही न आयें।** उनकी बात पर मैं हाँ-हूँ करता रहा। **मैंने काकाजी से कहा कि यहाँ एक ऐसी धर्मशाला बनवा दो, ताकि छुट्टियों इत्यादि में संत लोग यहाँ आ सकें। वे तुरंत बोले— हम क्यों बनायें? करो संकल्प कि ऐसा कोई सेठ मिल जाये, जिसकी धर्मशाला हो और वो हमें बुलाया करे। तो, धर्मशाला नहीं बल्कि ये रॉयल ऑर्चिड बन गया। काकाजी का ही संकल्प कहा जाये, वर्ना ऐसे हम लगातार नहीं आते, पर अब होटल एक्स्टेंड हुआ है, तो गर्ग साहेब ने कहा कि सब आना, सारा सत्संग आये।***

ऐसे बड़े संत का संकल्प काम करता है। *पर, काकाजी का कहने का मक़सद वो था कि सब हो जायेगा, निष्काम धर्म भी सिद्ध हो जायेगा, लेकिन सुहृदभाव से रहना बड़ा कठिन है। ये बातें जब तक हम उस लेवल पर नहीं जायें, पता नहीं लगेगी।* ***निष्काम धर्म यानि आजीवन ब्रह्मचारी होकर रहना, कितना कठिन जॉब है। पर, काकाजी कहते कि इससे भी अधिक सुहृदभाव से रहना कठिन है।*** *हम हेलो-हॉय करें, एक-दूसरे के गले लग जायें और इसे मानें कि सुहृदभाव है। पर, वो सुहृदभाव नहीं है। हरेक प्रसंग पर इनकी क्रियाएँ, स्वभाव हमें जँचें-अपना पायें, पूरक बन सकें वो सच्चा सुहृदभाव है। ऐसी डेवलपमेंट धीरे-धीरे अपने समाज में होती रही है। पर, गर्ग साहेब जैसे बड़े आशीर्वाद दें कि* ***इसकी चरम सीमा पर हम पहुंच पायें जिसे कहते हैं—गुणातीत का सुहृदभाव।*** *जहाँ प्रकृति-स्वभाव का कोई दर्शन नहीं। सिर्फ एक प्रभु का-महाराज का संबंध है। अपने दिल में यह पूरा बिठा दें। ऐसे मुक्त तैयार भी हो गये हैं। भरतभाई, राजुभाई, वशीभाई ऐसे हैं। ये ऑर्डिनरी लगते हैं, पर सुहृदभाव से जिस प्रकार रहते हैं वह देख कर ख्याल आता है कि ओहो इनकी क्या अचीवमेंट है। ऐसी अचीवमेंट की ओर हम अग्रसर रहें यही प्रार्थना...*

सावन मास होने के कारण 'काँवड़ यात्रा' चल रही थी। इन यात्रियों की सुविधा हेतु कुछ रास्ते बंद थे। सो, सुबह दस बजे तीन बसों द्वारा जो मुक्त दिल्ली मंदिर से निकले थे, वे 7-8 घंटे में मसूरी पहुँचने की बजाय रात को 12:30 बजे यानि 14 घंटे में पहुँचे। रात को नौ बजे से तो **प.पू. गुरुजी** व **प.पू. दीदी** मोबाइल द्वारा लगातार संपर्क में थे और चिंता करते हुए पूछ रहे थे—

बस में सब ठीक हैं न?

सबने खाना खाया या नहीं, आराम से बैठे हैं न?

सारे बच्चे ठीक हैं न?

और... जब बस वाले मुक्त पहुँच गये, उसके बाद ही प.पू. गुरुजी आराम में गये। **पू. गौरव भइया के रसोई स्टाफ ने खूब अपनेपन से रात को एक बजे सबको गर्मागरम भोजन कराया।** प.पू. गुरुजी का दर्शन व अच्छा भोजन करके सबकी थकान उतर गई और सभी **पू. गार्गी दीदी** द्वारा हर एक की सुविधा अनुसार निर्धारित किये कमरों में सोने गये।

22 जुलाई की सुबह **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में सुबह 8:30 बजे **'तारा हॉल'** में **धुन** हुई। सफ़र से सभी थके हुए थे, सो आज कहीं जाने का कार्यक्रम नहीं रखा था। शाम को रिसोर्ट के नये ब्लॉक में **पू. मैत्रीस्वामी** ने **महापूजा** की। मुंबई से **पू. अनिलभाई माणेक, पू. ओ.पी. अग्रवालजी**, दोनों का परिवार और **पू. कश्मीराभाभी** सीधा देहरादून आये थे। एयरपोर्ट पर इन सबको देख कर अपरिचित देहरादून निवासी रिटायर आई.ए.एस ऑफिसर **श्री आर.पी. अरोड़ाजी** और उनकी पत्नी **श्रीमती रीटाजी** सामने से आकर इन सबसे मिले और इनके बारे में पूछने लगे। तब पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने संक्षिप्त में प.पू. गुरुजी और सत्संग के बारे में उन्हें बताया। सो, महापूजा का लाभ लेने के लिये वे दोनों भी आये थे।

महापूजा संपन्न होने के बाद **पू. भीखूभाई झोंसा, पू. आनंदस्वामी** एवं **पू. विश्वास** ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

...कहते हैं—जीवन एक यात्रा है। भगवान ने जो मनुष्य देह दिया और उसमें भी भारत में जन्म दिया उसके पीछे एक मक़सद है। ***वचनामृत में लिखा है कि भरतखंड के अंदर भगवान या भगवान को मिले हुए साधु हमेशा विचरते रहते हैं।*** *भगवान को मिले हुए का मतलब—भगवान के साथ हेलो-हॉय किया ऐसा नहीं है। जिन्होंने भगवान को आत्मसात् कर लिया हो, भगवान के साथ एक्य हो गया हो, जीव शिवरूप बन गया हो। ऐसे साधु हमेशा विचरण करते रहते हैं और* ***उनका जिसे संबंध-आसरा होता है, उसका जीवन निहाल हो जाता है...***

मैं हमेशा कहता हूँ कि हम कोई ऐसा व्रत-तप करने वाले नहीं हैं। हम योग सिद्ध नहीं करते। एकादशी के दिन भी ऐसा होता है कि कब शाम हो, ताकि थोड़ा नींबू का शरबत या कुछ पी लें। ऐसा कहते हैं न कि कंगालियत की जीव दशा में सब जीते हैं। पर, तब भी भक्तों के चेहरे पर एक अलग चमक, रौनक, खुशी और आनंद दिखाई पड़ेगा। ये अरोड़ाजी पहली बार हमसे मिल रहे हैं, लेकिन जब ओ.पी., सेठ वगैरह को देखा, तो एक प्रतीति हुई होगी कि ये पूरा ग्रुप कुछ अलग ढंग से जीता है। जगत में रहते हुए, जगत के ढंग से नहीं जीते। वो अपनी मस्ती में ही मस्त रहते हैं। इनको और कुछ नज़र भी नहीं आयेगा।

आज हम छः बजे यहाँ आये, अभी सवा नौ बज गये। हमारा टाइम कहाँ चला गया... ***ये ही महिमा है कि ये सारा ग्रुप अलग है।*** *दूसरों को समझाने के*

लिए नहीं, खुद समझने की बात है। ***मसूरी आने की फलश्रुति या सार्थकता मैं तो तभी मानूं कि हम मसूरी से जायें, उससे पहले ये महिमा दृढ़ हो जाये।*** *फिर एक-दूसरे से मज़ाक न करें कि ओहो, आप तो बहुत बड़े अक्षरधाम के हैं। नहीं, खुद को मानना है और वैसा व्यवहार रखना है। व्यवहार में कोई फ़र्क नहीं करना है।* ***ये युवक एक-दूसरे के दोस्त, भाई जैसे हैं। पर, साथ-साथ ये कि हमेशा का मेरा साथी है। ऐसा नहीं कि जब तक जमा ठीक है, नहीं तो दूसरा। दूसरे भी हैं, लेकिन इसके साथ का संबंध तो छूट नहीं सकता। ऐसी भावना दृढ़ हो जाये, ये मसूरी ट्रीप की सार्थकता है। ये हो जाये, इसके लिये रोज़ रात को सोते समय प्रार्थना करें। साथ में ये संकल्प कि हे महाराज! मैं जहाँ रहता हूँ; जिस समाज के अंदर रहता हूँ, वो मेरा है और मैं इनका हूँ। मेरी ये भावना कभी टूटे नहीं।*** *जैसे ये राजुभाई दिल्ली आये हैं, उन्हें यहाँ का समाज थोड़े समय के लिए तो अच्छा ही लगेगा। राजुभाई भी हम लोगों को अच्छे लगेंगे। पर, पवई के अंदर रहते हुए मुक्त राजुभाई को भाते रहें और पवई के मुक्तों को राजुभाई भायें ऐसा* ***हरेक का कलेवर-ढाँचा बदल जाये, वो सच्चा सत्संग है। सत्संग मीन्स ट्रांसफार्मेशन...*** *हमारा ऐसा स्वभाव बदल जाये कि हमें हरेक पूछे कि तुम्हें ऐसा क्या हो गया कि जो चिड़चिड़ापन-उद्वेग था, उसके बजाय स्थिरता-नरमाई आ गई। ये जितना हो, वो हमने प्रभु का आसरा किया कहा जाये। ऐसा आसरा हम सब करें यही प्रार्थना।*

रिसोर्ट में सत्संग का ऐसा वातावरण देख कर **पू. गर्ग साहेब, पू. गौरव भइया, पू. इंदू आंटी, पू. सुचिका भाभी** एवं जगाधरी से आये उनके **माता-पिता** खूब भावुक हो गये थे।

23 जुलाई की सुबह धुन व नाश्ता करने के बाद, प.पू. गुरुजी सबको **'सहस्त्रधारा'** लेकर गये। पहले से व्यवस्था करने गये सेवकों ने वहाँ एक हॉटल के पास प.पू. गुरुजी एवं सभी के बैठने योग्य जगह देख रखी थी। सो, **सहस्त्रधारा के बहते पानी के किनारे पर प.पू. गुरुजी को कुर्सी पर बिठाया।** आस-पास हरिभक्त उनके साथ आनंद कर रहे थे। **गुरुहरि काकाजी की प्रसादी के इस स्थल की महिमा सबको समझाते हुए, प.पू. गुरुजी ने धुन करके संतों, सेवकों और हरिभक्तों पर पू. आशिष और पू. अभिषेक द्वारा दो-दो बाल्टी पानी डलवा कर आशीर्वाद दिया। दूसरी ओर, प.पू. दीदी ने भी बहनों पर प्रसादी का जल छांटा।** दो-ढाई घंटे सबको इस तरह आनंद करवाते हुए प.पू. गुरुजी के कपड़े पूरे गीले हो गये।

उनका ऐसा दर्शन करते हुए अंतर्मन रोते हुए प्रार्थना कर रहा था—

85 वर्ष की आयु और तबियत को तनिक भी गिने बिना, ***प.पू. गुरुजी द्वारा इतने लाड़ लड़ाने के बाद भी हम अपने दायरों में से निकलने को तैयार ही नहीं, यह हमारी जड़ता ही कही जाये। हे गुरुजी, अब किसी भी तरह हमें मन के जंजाल से छुड़वा दीजिये।***

सबको ब्रह्मानंद कराने के बाद नज़दीक के हॉटल में प.पू. गुरुजी कपड़े बदल कर आये। तत्पश्चात् पू. गौरव भइया द्वारा भेजा पॅक्ड प्रसाद लेकर सायं 5:00 बजे मसूरी के लिये निकले। सायं 7:00 बजे तक रिसोर्ट में पहुँच कर अल्पाहार करके सभी रिलेक्स हुए। **'तारा हॉल'** की छोटी सभा में **पू. निशिथ मिश्राजी** एवं **पू. आर.पी. गुप्ताजी** ने अपने अनुभवों का लाभ दिया। रात को **'विन्टर हॉल'** के बाहर बरामदे में भोजन लेने के बाद, कुछ छोटे-बड़े लड़कों ने प.पू. गुरुजी के समक्ष भंगड़ा किया और सभी सोने गये।

24 जुलाई की सुबह धुन, नाश्ता करने के बाद सभी रिसोर्ट के प्रांगण में एकत्र हुए। दोपहर तक वहाँ प.पू. गुरुजी के साथ संतों, सेवकों एवं हरिभक्तों ने और प.पू. दीदी के साथ बहनों व भाभियों ने ग्रुप फोटो खिंचवाईं। **रिसोर्ट के स्टाफ को प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी ने स्मृति भेंट दी।** तत्पश्चात् दोपहर का प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी आराम में गये। बच्चों ने खेलों का आनंद लिया और कुछ माल रोड घूमने गये।

सायं **'तारा हॉल'** में शिविर की अंतिम सभा में **पू. गर्ग साहेब, पू. गौरव भइया, पू. राजेश वर्माजी, पू. आशिष पुरी, पू. अक्षरस्वरूपस्वामी एवं पू. अभिषेक** ने आशिष याचना की। **प.पू. गुरुजी** ने गर्ग परिवार पर आशिष बरसाते हुए कहा—

...गर्ग साहेब के परिवार के पूर्व कर्म इतने अच्छे होंगे कि काकाजी ने हमें ठहरने के लिये ये जगह दिलवा दी... काकाजी का संबंध होना वो ही एक बहुत बड़े कर्म का फल है और वो हमें भोगते रहना है, टेस्ट करते रहना है, बढ़ाते रहना है...

23 तारीख को **पू. गर्ग साहेब, पू. इंदू आंटी** उम्र के कारण और **पू. गौरव भइया** रिसोर्ट की व्यवस्था देखने के कारण सहस्त्रधारा नहीं आये थे। सेवक वहाँ से प्रसादी का थोड़ा जल लाये थे, सो **अपनी प्रसन्नता उड़ेलते हुए प.पू. गुरुजी ने दोनों के सिर पर प्रसादी का वह जल डाला। प.पू. दीदी** ने **पू. इंदू आंटी** के सिर पर

वह जल छिड़का। उपस्थित सभी के लिये एक अविस्मरणीय क्षण थी; क्योंकि प.पू. गुरुजी बिना सेवक के सहारे खुद सहजता से खड़े थे। रात का प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी आराम में गये।

मसूरी का कार्यक्रम **26 जुलाई** तक था। परंतु, इस दिन **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** को अंतर्धान हुए एक वर्ष पूरा हो रहा था। इस उपलक्ष्य में सोखड़ा-हरिधाम में **प.पू. प्रेमस्वामीजी** ने **'आत्मीय कृतज्ञता महापर्व'** का आयोजन किया था। सो, प.पू. गुरुजी ने **25 जुलाई** की शाम को देहरादून से फ्लाईट द्वारा अमदावाद जाने का निर्णय लिया। अतः 25 जुलाई की सुबह धुन, नाश्ता व दोपहर का भोजन करके, **प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. दीदी** कुछ मुक्तों के साथ दोपहर 3:00 बजे देहरादून एयरपोर्ट के लिये रवाना हुए और ढाई तीन घंटे में वहाँ पहुँचे। 7:30 बजे अमदावाद जाने वाली यह फ्लाईट बहुत छोटी थी। उस पर चढ़ने वाली सीढ़ी की चौड़ाई इतनी ही थी कि व्यक्ति अकेला ही चढ़ पाये। जैसे कि प.पू. गुरुजी सहारे के बिना चल नहीं पाते, तो उन्हें क्राफ्ट में चढ़ने में मुश्किल हुई। इससे भी अधिक प्लेन के पंखे इतने नज़दीक थे कि पौने दो घंटे की इस फ्लाईट में बहुत आवाज़ होती रही। लेकिन, प.पू. गुरुजी तो अलमस्ताई से बैठे। करीब पौने नौ बजे अमदावाद पहुँचे, तो वहाँ के स्थानीय मुक्त गाड़ियाँ और अल्पाहार लेकर आये थे। बारीश काफ़ी तेज़ होने के कारण दो घंटे में वडोदरा-हरिधाम रात को 12 बजे पहुँचे। यूँ **मसूरी से लेकर वडोदरा तक नौ घंटे में पहुँचे।** पर, तब भी प.पू. गुरुजी एकदम फ्रेश थे और संतों-सेवकों से मिल कर करीब सवा एक बजे सोये। **प.पू. गुरुजी द्वारा यह ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के प्रति माहात्म्य और प्रीति का दर्शन था।**

26 जुलाई की सुबह सभा से पहले **प.पू. प्रेमस्वामीजी** एवं **प.पू. दासस्वामीजी**, प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आये। उन्होंने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि इतना लंबा सफ़र तय करके आये हैं, तो आराम से सभा में आइयेगा।

मंच पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति के आगे सुंदर आसन पर ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की मूर्ति स्थापित थी। ऐसा लग रहा था मानो **ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी साक्षात् विराजमान हों।** करीब पौने दस बजे स्वामिनारायण धुन-भजन से शुरू हुए इस महापर्व में सर्वप्रथम **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की**

जीवनभावना का प्रस्तुतिकरण हुआ। तत्पश्चात् फूलों से सुसज्जित लिफ्ट द्वारा सबको दर्शन देते हुए, **प.पू. अश्विनभाई-प.पू. रतिकाका, प.पू. गुरुजी-प.पू. प्रेमस्वामीजी** मंच पर पधारे। सत्संग के आत्मीय बालकों ने **भक्ति नृत्य** प्रस्तुत किया। मंचस्थ स्वरूपों-संतों को शाल-हार अर्पण करके सम्मानित किया गया। प.पू. स्वामीजी के प्रथम वार्षिक शाश्वत् स्मृति दिन के निमित्त उनके **'अगाध जीवन का अल्प दर्शन'** विडियो द्वारा प्रस्तुत हुआ।

तदोपरांत ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी का अविरत परिश्रम याद करते हुए, अंतर के रुदन से **प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी** ने उनके श्रीचरणों में प्रार्थना अर्पण की, जिसके बारे में **प.पू. गुरुजी** ने बताया कि **यह प्रार्थना सभी के लिये रोज़ पूजा में पढ़ने योग्य है।** ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी के अंतेवासी सेवक **पू. प्रभुप्रियस्वामी** एवं **पू. प्रशांतभाई** ने विडियो द्वारा स्मृति दर्शन कराया। **ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी** ने समय-समय पर कई बार संकेत दिया कि **हरिधाम की जिम्मेदारी वे प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी को सौंपते हैं,** ऐसे आशीर्वचन का दर्शन सभी ने विडियो द्वारा किया। महापर्व की फलश्रुति रूप **प.पू. गुरुजी, प.पू. प्रेमस्वरूस्वामीजी** एवं **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीर्वाद दिया।

दोपहर करीब दो बजे महापर्व की समाप्ति हुई। चौमासे की चिपचिपाहट में भी ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी के प्रति भक्ति अदा करने हेतु करीब दस हज़ार हरिभक्त आये थे। **हरिधाम के प्रांगण में वही एहसास था, जो ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी की स्थूल हाज़िरी में होता था।** क्योंकि **सत्पुरुष धरती से कभी जाते ही नहीं हैं,** उसी का यह प्रमाण है और अब **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के द्वारा ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी चैतन्यों की वैसी ही परवरिश करते रहेंगे, ऐसी मुक्तों को दृढ़ता है।**

दोपहर को महाप्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी ने थोड़ी देर विश्राम किया। सायं साढ़े पाँच बजे के करीब ब्रह्मस्वरूप स्वामीजी के समाधि स्थल पर दर्शन व परिक्रमा करके एयरपोर्ट के लिये निकल गये। **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी** एयरपोर्ट के अंदर तक प.पू. गुरुजी को छोड़ने के लिये आये। रात 8:20 को एयर इंडिया की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी व सभी दिल्ली के लिये रवाना हुए और रात ग्यारह बजे तक मंदिर पहुँचे, लेकिन प.पू. गुरुजी को थकान का तो नामोनिशान नहीं था।

दूसरी ओर—मसूरी में **पू. गर्ग साहेब** और **पू. गौरव भइया** द्वारा **भक्तिहृदय से की गई अव्वल सुविधाओं के प्रति नतमस्तक होते हुए, सभी मुक्त** फ्लाईट, ट्रेन और बसों व गाड़ियों से रवाना होकर शाम तक दिल्ली मंदिर और अपने-अपने घर आ गये। इस प्रकार **'ब्रह्मविद्या सत्संग शिविर'** संपन्न हुई।

21 जुलाई– मसूरी में 'रॉयल आर्चिड रिसोर्ट' के नये ब्लॉक का उद्घाटन...

22 जुलाई– रिसोर्ट के नये ब्लॉक में महापूजा...

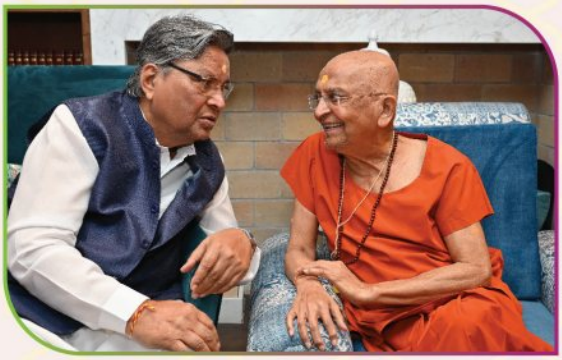

23 जुलाई – प्रासादिक स्थल 'सहस्रधारा' पर आशिष वर्षा...

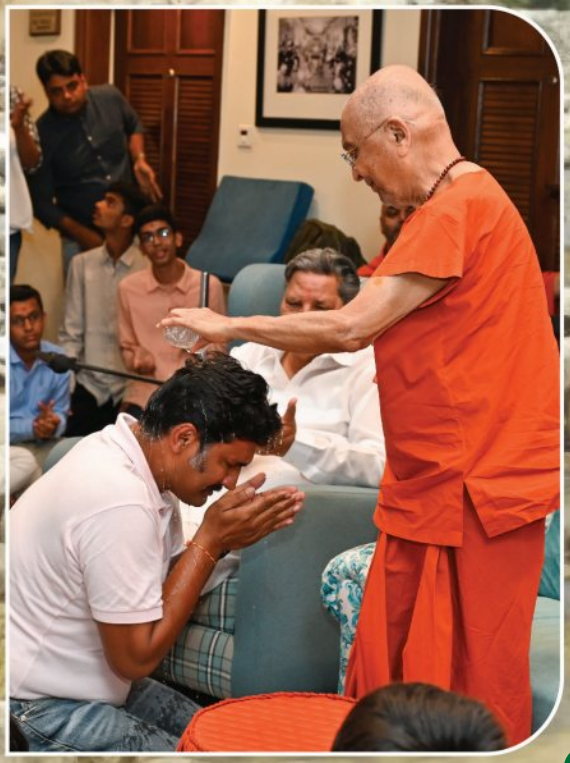

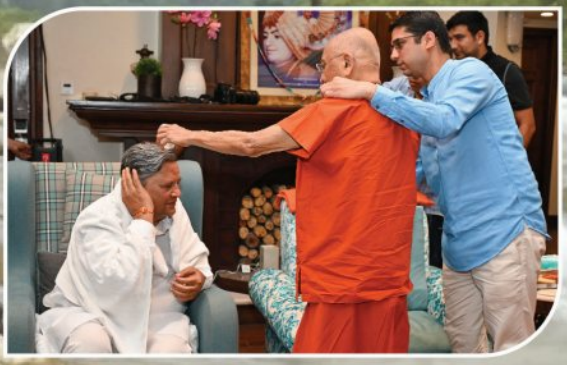

रिसोर्ट के ‘विंटर हॉल’ के टॅरेस पर आनंदोब्रह्म...

24 जुलाई– सुबह रिसोर्ट के कार्यकर्ताओं को स्मृति भेंट अर्पण...

‘ब्रह्मविद्या सत्संग शिविर’ की सामूहिक स्मृति...

अक्षरधाम के मुक्तों संग बीते सुनहरे पल...

24 जुलाई– सायं सभा...

गर्ग साहेब के परिवार के पूर्व कर्म अच्छे होंगे कि काकाजी ने ठहरने के लिए ये जगह दिलवा दी...
– प.पू. गुरुजी

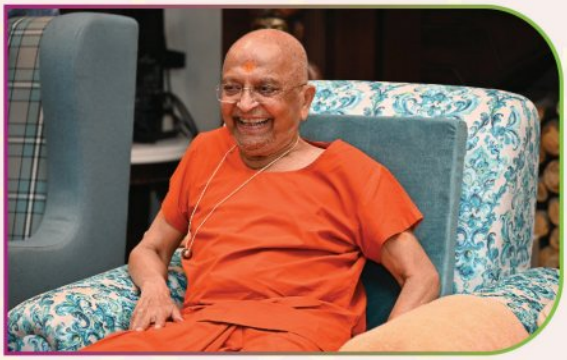

26 जुलाई– हरिधाम में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की स्मृति में 'आत्मीय कृतज्ञता महापर्व'

स्वामीजी हरिधाम छोड़ कर कभी जा ही नहीं सकते, क्योंकि यहाँ प्रेमस्वामी हैं... -प.पू.गुरुजी

दिल से मानना कि प्रेमस्वामी को टीका कर रहे हैं
वो अक्षरधाम में बिराजे स्वामीजी को कर रहे हैं... - प.पू. गुरुजी

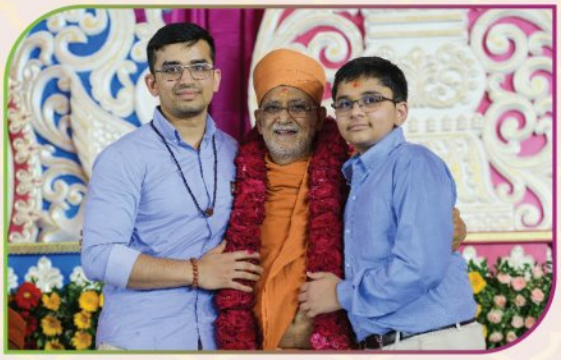

प्रेमस्वामी ने स्वामीजी को वश कर लिया... -प.पू.गुरुजी

अगस्त मास

रक्षाबंधन

हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को रक्षाबंधन का पवित्र पर्व मनाया जाता है। 'रक्षा बंधन' का शाब्दिक अर्थ है— 'सुरक्षा, दायित्व या देखभाल का बंधन' जो कि **न कदापि खण्डितः अर्थात-कभी न टूटने वाला बंधन होता है!**

जगत में पवित्रता तथा स्नेह का सूचक यह पर्व भाई-बहन को अटूट बंधन में बांधने का प्रतीक तो है ही; लेकिन प्रगट के उपासकों के लिये प्रभुधारक संत से **राखी** बँधवा कर, अपने जीव के हर प्रकार से रक्षण की प्रार्थना करने का सुअवसर है। यह एक ऐसा **रक्षा सूत्र** है, जो भीतर में दृढ़ता कराता है कि **प्रभु मेरे हैं। वे पल-पल मेरे साथ हैं और मेरा अहित नहीं होने देंगे।**

दो वर्ष कोविड की पाबंदी के बाद, इस पर्व निमित्त **11 अगस्त** की सुबह 9:00 बजे महापूजा के लिये सभी एकत्र हुए। इस बार **15 अगस्त** को **स्वतंत्रता दिवस** के **75 वर्ष** पूरे हो रहे थे, उसका उद्घोष करते हुए श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति के पीछे तिरंगे की दो बड़ी राखियों से सजावट की थी। 'वेस्ट में से बेस्ट' दर्शाते हुए **पू. मैत्रीस्वामी** ने सेलो टेप के बड़े रोल्स ख़तम होने के बाद, उसके बचे हुए गोल रिंग्स से ये कलात्मक राखियाँ बनाई थीं। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे **'साधु पर्व'** के चिन्ह वाली बड़ी राखी लगाई थी। श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति के नीचे स्टेन्ड पर भारत के सात तिरंगे झंडे लगाये थे। आस-पास **75 अंक** के दो लोगो लगाये थे, जिस पर लिखा था—**आज़ादी का अमृत महोत्सव**! श्री ठाकुरजी के सिंहासन के ऊपरी भाग पर प्रार्थना लिखी थी—

गुणातीत संत की निश्रा में रह कर
हठ, मान, ईर्ष्या, वृत्ति और स्वभाव से हम स्वतंत्र हो जायें...

प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. मैत्रीस्वामी ने सबके निरामय स्वास्थ्य एवं क्षमायाचना करते हुए महापूजा की पूर्णाहुति करी। तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई व पू. डॉ. दिव्यांग** ने भजन प्रस्तुत किया... **पू. ओ.पी अग्रवालजी** ने अनुभव प्रसंग बताते हुए कहा—

...हम खामखाह चिंता करते हैं, हमें भगवान ने इतना अच्छा संबंध दिया है कि हमारी रक्षा होती ही रहती है। गुरुजी तो कहते हैं कि भले ही कोई सत्संगी न भी हो, पर यदि वो सत्संगी के साथ है, तो उसकी वजह से प्रभु उसकी भी रक्षा करेंगे...

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** के लिये **अक्षरज्योति की बहनों** एवं **पू. निशि दीदी** की

ओर से बनाई **'चाबी'** के चिन्ह-प्रतीक की **राखी** की निम्न प्रार्थना **पू. राकेशभाई** ने पढ़ी—

*हे गुरुजी! काकाजी और आपने हमें संत को राज़ी करने की कई करामातों की चाबियाँ बना कर दीं। पर, हमने अपनी नादानियों में कितनी बार उन चाबियों को खो भी दिया। लेकिन, पिछले कुछ समय से आप निरंतर एक **'मास्टर की'** हम सबको बता रहे हैं कि **भक्तों के साथ का सुहृदभाव और जहाँ हम रहते हैं, वहाँ अंदरोअंदर आपसी एकता**... तो ये जो 'मास्टर की' आपने दी है, उसे खोयें नहीं-कभी भूलें नहीं। इस 'मास्टर की' से हम आपको हमेशा अपने साथ रखें-यही याचना...*

यह राखी **पू. अभिषेक** ने और **पू. शशिभाभी यादवजी** की ओर से उनके पति **पू. विजयपालजी** ने **प.पू गुरुजी** को राखी अर्पण की। तदोपरांत मंदिर के संतों, सेवकों और हरिभक्तों ने धर्मकुल की मूर्ति का पूजन करके, **प.पू गुरुजी व पू. सुहृदस्वामीजी** से राखी बंधवाई।

आत्मीयताभरी हूँफ से दिल्ली सत्संग समाज के सभी भाइयों के लिये प.पू. दीदी दिव्य माँ-बड़ी बहन बनी हैं। उनकी भावना को साकार करते हुए, प.पू. दीदी प्रति वर्ष उपस्थित भाइयों को 'राखी' बांधती हैं। इस वर्ष भी प.पू. दीदी ने भाइयों को बहन का **'रक्षा कवच'** प्रदान किया। सत्संगी बहनों-भाभियों को **पू. स्मिता दीदी एवं पू. गौरी दीदी** ने राखी बांधी। महाप्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

स्वतंत्रता दिवस का अमृत पर्व एवं प.पू. दीदी के महाभिनिष्क्रमण की माणिक जयंती...

जब भी भारत का नाम आता है, तब प.पू. गुरुजी के मुख पर एक अनोखी चमक दिखाई देती है। अबकी बार **15 अगस्त 2022—भारत को आज़ादी मिले 75 वर्ष पूरे हुए।** इस उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। प.पू. गुरुजी की आंतरिक इच्छा अनुसार, संतों-सेवकों ने भी सरकार के सूत्र—**हर घर तिरंगा**... और आज़ादी के अमृत पर्व को महत्त्व देते हुए मंदिर के प्रागंण, कल्पवृक्ष व चिदाकाश हॉल को तिरंगे से भर दिया। और तो और, राखी के दिन महापूजा की प्रसादी के तिरंगे प.पू. गुरुजी ने प्रति परिवार सबको दिये, ताकि अपने घरों में लगा कर सब इस अभियान में शामिल हों। प.पू. गुरुजी की ऐसी भावना देशभक्ति की सुवास फैलाती है।

और... 'सोने पे सुहागा' यह था कि **प.पू. आनंदी दीदी के 'महाभिनिष्क्रमण'**—यानि भगवान भजने हेतु गृहत्याग किये **40 वर्ष**

पूर्ण हो रहे थे। **उत्तरभारत की बहनों के आत्मिक उत्थान के लिये तो यह 'स्त्री स्वातंत्र्य दिवस' कहा जाये।** ऐसे मंगल प्रसंगों को मनाने के लिये सभी सायं 7 बजे 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्र हुए, जो हर तरह तिरंगों से सुसज्जित था। **गुरुहरि काकाजी महाराज की पसंदीदा पात्र प.पू. दीदी** के चालीस वर्षों के अध्यात्म पथ को **'दीदी के चैतन्य की उत्कर्ष यात्रा'** नामक टाइम लाइन के अंतर्गत प्रस्तुत किया था। इसमें प.पू. दीदी के जन्म व सत्संग में आने के बाद से लेकर, अब तक **'मील के पत्थर'** साबित हुए वर्षों का विवरण था। जिससे नये-पुराने मुक्तों को प.पू. दीदी का संक्षिप्त परिचय मिला। **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा, पू. विश्वास** एवं **पू. यमन मिश्रा** ने देशभक्ति के गीत और भजन प्रस्तुत किये। इस मंगल अवसर पर **पू. भद्रायुभाई जानी, पू. निशिथ मिश्राजी,** प.पू. दीदी के पूर्वाश्रम के छोटे भाई **पू. जितेन्द्र कालराजी** एवं **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने स्वानुभवों से **प.पू दीदी द्वारा भक्तों के लिये किये अथक् परिश्रम की झांकी कराई।**

भारत के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए और प.पू. दीदी पर प्रसन्नता बरसाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया–

*...मेरे प्यारे सत्संग समाज को आज आज़ादी के अमृत महोत्सव पर खूब-खूब बधाई सह हार्दिक जय स्वामिनारायण... भारत की पुण्यभूमि पर भगवान ने कई अवतार लिये और कई संतों के पुनीत चरणों से यह भूमि पावन हुई है। **गुणातीत परंपरा के संत काकाजी महाराज ने आशीष दिये हैं कि भारत का भावी बहुत उज्ज्वल है।** सो, **आज़ादी के अमृत वर्ष में हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी के नेतृत्व में भारत दोबारा सोने की चिड़िया बनकर, विश्व के लिए पैसों की बौछार करने वाला समृद्ध और प्रेरणादायी देश बने ऐसी भगवान स्वामिनारायण, काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करते हैं।** वंदे मातरम्, भारत माता की जय, जय, जय। जय हिंद।*

*जैसे सभी ने बातें करी उसका निष्कर्ष यही कि **दीदी सत्संग में आई नहीं है, काकाजी ने उसे खींच लिया है।** जैसे कि सभी ने बताया कि मंदिर के आगे का रास्ता पहले खाली रहता था, तो गुरुजी सेवक के साथ टहलने निकलते थे। सेवक ने बताया कि ये जो लड़की छत पर चलते-चलते पढ़ती है, वो कभी-कभी अपने मंदिर में भी फोन करने आती है। मैंने तो सहज ही कह दिया था कि ये तो अपनी लड़की है और आगे जाकर सत्संग का खूब काम करेगी। काकाजी ने इस बात की पुष्टि भी कर दी। तो, **ये काकाजी की देन है और हम सभी इसके साक्षी हैं।** दीदी के होने से भाभियों की घरेलू समस्याएँ या सत्संग के कारोबार दीदी सेट करवा देती हैं। **दीदी भजन-सेवा के माध्यम से सबको प्रभु से जोड़ती हैं।** आज*

भारत की स्वतंत्रता का दिन है। हरेक को किसी के साथ या किसी पर अवलंबित रह कर जीना पसंद नहीं। स्वतंत्रता यानि खुली हवा में फ्री होकर घूमने में एक सच्चा आनंद समाया है। जिसका ज़िक्र अलग-अलग ढंग से आज हमारे प्राइम मिनिस्टर ने किया। बस इसी राह पर चलते हुए हम काल, कर्म, माया से अधीन रह कर जिया ना करें। सत्संग में जब नये-नये आते हैं, तब संकल्प कराते हुए संत कहते हैं कि जाओ, आज तक का सब माफ़। यदि प्रारब्ध-कर्म भुगतने भी हों, तो वो भी प्रभु थोड़े रिलेक्स करवा कर, आगे-पीछे हटवा कर ना के बराबर कर देते हैं। सहज ही हम पार कर जाते हैं। ये सुयोग और किसी जगह पर नहीं मिलेगा। कहा जाता है कि ***प्रारब्ध और प्रकृति तो आख़िर में चिता के साथ ही ख़ाक होते हैं। जबकि अपने यहां ऐसे संकल्प करा करके उसे उसी समय निपटा देते हैं, ना के बराबर कर देते हैं।*** *ये गुणातीत साधु का अनमोल ऐश्वर्य है और उसी गोद-परंपरा के अंदर हम आज बैठे हुए हैं...* ***काकाजी कहते थे 'This powerhouse is constant and continuous'.*** *तो उस continuity में हमारा सब काम automatic होता जाता है।* ***हम सबके साथ सुहृदभाव, आत्मीयता और कुटुंबभाव से हिलमिल कर रहा करें। दीदी ने और कुछ नहीं किया, यही किया है। उन्हें मेंटल-फिज़िकल कितनी कसनी आई होगी।*** *आध्यात्मिकता का तो मुझे ख्याल नहीं पड़ता; लेकिन* ***वो भी जर्नी आसान नहीं है, यदि संत का सहारा न हो। वो सब पार करके दीदी आज बैठी हुई हैं। वो जो मार्गदर्शन देगीं, उसी में अपना श्रेय और आध्यात्मिकता का रास्ता छोटा व सरल बन जायेगा। इस बात को पकड़ कर हम हमेशा इनके छोटे से छोटे अल्प जैसे सूचन को भी वर्तन में लायें और आगे बढ़ते रहें, यही प्रार्थना।***

प.पू. दीदी की **दिव्य माँ पू. डॉली दीदी** ने आज के अवसर के लिये स्वयं हार बना कर मुंबई से भेजा था। **पू. स्मिता दीदी** एवं **पू. हंसा दादी** ने सभी की ओर से अर्पण किया। **पू. गौरी दीदी** एवं **पू. स्वाति दीदी** ने बहनों की ओर से एवं **सत्संग के छोटे बच्चों** ने प्रार्थना कार्ड दिया। **प.पू. गुरुजी** ने अपनी प्रसादी की **'राखी'** एवं **'पूजा का दर्पण' प.पू. दीदी** को स्मृति भेंट के रूप में भिजवाया। अंत में **प.पू. गुरुजी** की ओर से, सभी को प्रति परिवार एक विशिष्ट स्मृति भेंट दी गई। जिसमें आशीर्वाद रूप **श्री ठाकुरजी** की मूर्ति थी, **प.पू. गुरुजी** की ओर से सर्व प्रकार से समृद्धि की प्रार्थना लिखी थी एवं माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी** के फोटो के साथ, **प.पू. गुरुजी के प्राकट्य वर्ष 1937** को दर्शाते हुए, भारत सरकार द्वारा **आज़ादी के अमृत पर्व** निमित्त ज़ारी किये **नये सिक्के 20+10+5+2 = 37** अंकित किये थे। तत्पश्चात् **राष्ट्रीय गान** के बाद सभी ने प्रसाद लिया।

11 अगस्त– रक्षाबंधन

गुणातीत संत की निश्रा में रहकर हर प्रकार से स्वतंत्र हो जायें...

न कदापि खण्डितः

15 अगस्त– स्वतंत्रता दिवस का अमृतपर्व...

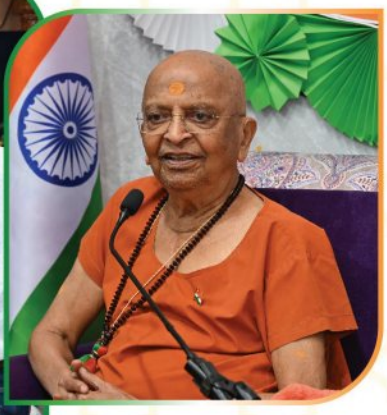

प.पू. दीदी के महाभिनिष्क्रमण की माणिक जयंती...

आज़ादी के अमृत पर्व की स्मृति भेंट...

1981-2022

दीदी के चैतन्य की उत्कर्ष यात्रा

टाइम लाईन...

03.02.1987
काकाजी के अंतर्ध्यान होने के बाद, उनकी मूर्ति के समक्ष धुन करके दीदी और चार बहनों ने स्वयं **पार्षदी दीक्षा** ली।

03.02.1988
काकाजी के स्वधामगमन के बाद, गुरुजी ने सभी स्वरूपों के वरद् हस्तों से **दिल्ली मंदिर की नींव** रखवाई। दीदी ने सभी हरिभक्तों को सेवा के लिये तत्पर किया।

28.06.1988
हरिधाम के प्रांगण में दीदी और चार बहनों ने सोनाबा, ज्योति बहन, हंसा दीदी के वरद् हस्तों से **भागवती दीक्षा** ली।

जुलाई 1988
मधु जीजी के घर छः साल रहने के बाद, दीदी चार बहनों के साथ **1-B जनता फ्लैट्स** में रहीं।

04.12.1988
78 SFS (शक्ति एपार्टमेन्ट्स) में पाँचों बहनें रहने आईं। तब गुरुजी ने इस स्थान को **'अक्षरज्योति'** नाम दिया।

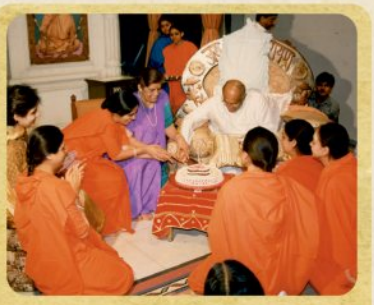

15.03.1999
पप्पाजी, बेन, ज्योति बहन की निश्रा में दीदी ने **चार बहनों को भागवती दीक्षा** दिलवाई।

3 से 5.02.2012
दीदी के नेतृत्व व मार्गदर्शन में **काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती** एवं **गुरुजी का अमृतपर्व 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के रूप में मनाया गया।

9.9.2012
भरतभाई, वशीभाई एवं दीदी के वरद् हस्तों से **'स्वामिनारायण अंडरपास'** का उद्घाटन हुआ।

13.3.2018
देवी बहन व प्रेम बहन के सान्निध्य में दीदी ने **पाँच बहनों को भागवती दीक्षा** एवं **तीन बहनों को साधक की ड्रेस** दी।

12.5.2018
हंसा दीदी की आज्ञा व आशीर्वाद से दीदी ने **सर्वप्रथम एक बहन को दीक्षा** और **एक बहन को साधक की ड्रेस** दी।

अक्तुबर मास

धनत्रयोदशी

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु अंधकार है और इसका हरण करने वाला प्रकाश सबसे बड़ा मित्र! प्रकाश मनुष्य को देखने की शक्ति देता है और वह भगवान की सृष्टि से अवगत होता है। यूं **जैसे दीपक बाह्य अंधकार को समाप्त करता है, वैसे ही जीव के परम मित्र सच्चे संत उसके भीतर का अंधकार दूर करके हृदय में प्रभु का वास कराते हैं।**

इसी के प्रतीक रूप **'कल्पवृक्ष'** हॉल में लाल, हरे व पीले रंग के काग़ज़ों से बने दीपकों की सजावट से **पू. मैत्रीस्वामी** एवं **सेवकों** ने **22 अक्तुबर - धनत्रयोदशी** से प्रारंभ होते दीपोत्सव कार्यक्रमों की मंगल शुरुआत की। नये-पुराने मुक्तों को स्मरण कराते हुए, दिसंबर में होने वाले **प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्योत्सव 'साधु पर्व'** के लोगो वाले बड़े-बड़े ध्वज लगाये थे।

प.पू. गुरुजी की निश्रा में सायं 6:30 बजे **पू. मैत्रीस्वामी** ने महापूजा आरंभ की, जिसमें **'साधु पर्व'** के चिन्ह वाले **चाँदी** के नये सिक्कों का पूजन हुआ। महापूजा के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिये—

...आज धनतेरस का मांगलिक-शुभ दिन! इस निमित्त साधु पर्व के उपलक्ष्य में चाँदी का सिक्का बनाया है... सिक्का तो एक प्रतीक रूप है। हमारे लिये तो ***सच्चा धन प्रभुधारक संतों के साथ का संबंध है।*** *काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब, दिनकर अंकल के साथ* ***हमारा संबंध दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाये-प्रगाढ़ होता जाये,*** *यही आज के दिन प्रार्थना और* ***आशीर्वाद...*** *सहजानंदस्वामी महाराज की जय। काकाजी हमारी ये प्रार्थना सुन कर सबको ये आशीर्वाद देकर निहाल कर दें, यही अभ्यर्थना!*

प.पू. गुरुजी द्वारा दिये उपरोक्त संक्षिप्त आशीर्वाद बहुत मर्मयुक्त और साधक की जाग्रतता का एहसास कराते हैं। **गुरुहरि काकाजी के आशिष से प.पू. गुरुजी ऐसे हैं कि उनके संकल्प व आशीर्वाद से संबंध वाले मुक्तों की आधि, व्याधि और उपाधि सब टलती है। लेकिन, वे एक सेवक की अदा से ही जीते हैं।** हम सभी ने देखा है कि सभाओं या उत्सवों में संबोधन करते हुए या किसी को कुछ लिख कर देने पर उन्होंने अपनी ओर से कभी भी **'आशीर्वाद'** शब्द प्रयोग नहीं किया। हमेशा ऐसा ही कहा या लिखा है—यही **प्रार्थना**! परंतु, प्रभुधारक संतों की वाणी, वर्तन और विचार पर कब्ज़ा तो महाराज का ही होता है, सो प.पू. गुरुजी ने पहली बार **आशीर्वाद** शब्द कह कर अपने वचन पूरे किये। पर, वे इतने जागरूक

हैं कि तुरंत ही **काकाजी** से **प्रार्थना** करते हुए अपनी बात पूरी की। इस दृष्टि से प.पू. गुरुजी के ये आशीर्वचन खूब मननीय हैं।

महापूजा संपन्न होने के बाद, जिन मुक्तों ने पूजन के लिये सिक्के रखवाये थे, उन्होंने पू. कौशिकभाई से वे प्राप्त किये और सभी ने प्रसाद लिया।

दीपोत्सव

24 अक्तुबर—स्वच्छता व प्रकाश के पर्व दीवाली के दिन भी सायं 6:30 बजे मंदिर के **'कल्पवृक्ष'** हॉल में **शारदा पूजन** की महापूजा के लिये सभी मुक्त आये। प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पू. मैत्रीस्वामी ने महापूजा की। पूजनविधि के समय **प.पू. गुरुजी** की ओर से **पू. सुहृदस्वामीजी** एवं **पू. मैत्रीस्वामी** ने हरिभक्तों के बही-खातों पर 'नागरबेल' के पान रख कर कंकु और अक्षत से पूजन किया। महापूजा के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

...दीवाली पर शारदा पूजन निमित्त महापूजा में सभी ने धुन करी। आज के दिन महाराज से ये विनती-प्रार्थना-आजीजी है कि सबको तन, मन, धन और आत्मा से सुखी व समृद्ध रखें, ताकि ***दिसंबर में जो साधु पर्व आ रहा है, उसमें सब हर तरीके से—खुले हाथ, मन और हृदय से सेवा करें और साधु पर्व को सर्वोच्च समैया बनाने में कटिबद्ध हो जायें...***

तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

अन्नकूटोत्सव

इस बार दीवाली के दूसरे दिन सायं सूर्य ग्रहण होने के कारण एक दुविधा थी कि अन्नकूट 26 अक्तुबर को मनाया जाये या नहीं। क्योंकि अन्नकूट में लगने वाले कई प्रकार के **व्यंजनों** का भोग **हरिभक्तों के घर** से बन कर आता है और... करीब **1800 मुक्तों** के लिये मंदिर में कढ़ी, चावल व मिक्स सब्जी का प्रसाद **पू. सुहृदस्वामीजी** एवं अन्य संत-सेवक बनाते हैं। यह वार्षिक उत्सव अच्छी तरह हो सके, इसलिये **27 अक्तुबर** को अन्नकूट मनाना तय किया।

26 तारीख को बहनों-भाभियों ने सब्जी काटने की सेवा की और रात को 12 बजे के बाद पू. सुहृदस्वामीजी की निगरानी में महाप्रसाद बनाना शुरू हुआ। **27** की सुबह करीब 7:00 बजे तक हरिभक्त अपने घरों से भोग बना कर ले आये। जिसे सजावट करने वाले सेवक कल्पवृक्ष हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष कलात्मक रूप से लगा रहे थे। चहुँ ओर फूलों से मंदिर का पूरा परिसर सजा था। करीब 10 बजे **प.पू. गुरुजी** मंदिर के पिछले भाग में बने सभा मंडप में पधारे। मंच की पृष्ठभूमि पर **हमारे जीवन में उजाला करने वाले गुणातीत स्वरूपों** की मूर्तियों को **दीयों** के आकार में दर्शाया था और नूतन वर्ष की प्रार्थना लिखी थी—

हे प्रभु! 'साधु पर्व' की साधुता
और
'मैत्री सुमिरन पर्व' की मैत्री भावना सभी के हृदय में प्रगटा दीजिये...

नूतन वर्ष की इस सभा में **पू. अजय तनेजाजी, पू. राकेशभाई, पू. अनूप टागंरीजी, पू. डॉ. दिव्यांग, पू. हृदय एवं पू.विश्वास** ने भजन गाने एवं **पू. पुण्यम्** ने ढोलक बजाने की सेवा की। **पू. मैत्रीस्वामी** का जन्मदिन था, सो उनकी सेवाओं एवं मंदिर की कई सेवाओं में जुड़े अन्य सेवकों-भक्तों का गुणगान करते हुए **पू. सनी भास्कर** ने प्रार्थना की। दीवाली से जुड़े पाँच मंगल दिनों का महत्व और श्री रामानंदस्वामी का एक प्रसंग बताते हुए **पू. निशिथ मिश्राजी** ने याचना की। अंत में नूतन वर्ष का निमंत्रण कार्ड समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया—

...अभी 2022 पूरा होगा और 2023 में हम दाख़िल होंगे। साधुता पाने के लिये साधु पर्व और भक्तों के साथ की मैत्री दृढ़ करने मैत्री पर्व मनायेंगे। ***जो हमें प्रगट प्रभु के साथ का संबंध दृढ़ कराये, ऐसे भगवदी मुक्तों के साथ कटिबद्ध होकर मैत्री रखने की क़वायत में जुड़ जायें, वो सच्चा मैत्री पर्व।*** *हरेक को कोई न कोई चीज़ परेशान करती है। सभी की ये भावना होती है कि प्रकृति, स्वभाव और हठ-मान-ईर्ष्या से निज़ात पाने का कोई तरीका हो। हमारे काकाजी ने वो बताया है और भगवान स्वामिनारायण भी इसी बात पर ज़ोर देते रहते थे। हम स्वभावयुक्त मुक्तों के साथ सुहृदभाव, मैत्रीभाव से वर्तते रहेंगे, रिलेशन बनाये रखेंगे और मैत्री टूटने नहीं देंगे, तो उस प्रोसेस में ख्याल पड़ेगा कि सामने वाले व्यक्ति को राज़ी रखने के लिए हमें अपनी काफ़ी चीज़ें छोड़नी पड़ती हैं।* ***इसलिए हमेशा ज़ोर दिया कि मुक्तों के साथ सुहृदभाव रखो उनसे मिल-जुलकर रहो। ये एक बड़ा स्पिरीच्युअल प्रोसेस है।***

साहेब ने एक बार बात करी थी कि हम बातें करते हैं कि हम ये साधना करने के लिए इकट्ठे हुए हैं, लेकिन कोई अनजाना देखे तो उसे कोई साधना नज़र नहीं आएगी। अभी भी देखेंगे तो ऐसा लगेगा कि छोटी सभा में थोड़ी ज्ञान की बातें करी और बाद में सब अलग-अलग ग्रुप में बैठकर कढ़ी चावल का प्रसाद खायेंगे, हंसी-मज़ाक करेंगे। तो इसमें क्या साधना रही? ***पर, मिल-जुलकर रहना सबसे बड़ी साधना है।*** *हमें ख्याल नहीं पड़ता, पर करोड़ों साल की तपस्या के बाद भी ऋषि-मुनियों की वासना नहीं टली, स्वभाव टलना तो*

बहुत दूर की बात है। महाराज ने आशीर्वाद दिया कि मुक्तों के साथ सुहृदभाव से रहें। ***जगत में भी हम अपनी गरज़ से सुहृदभाव से वर्तते होंगे, पर वहां प्रभु की इंटरवेंशन नहीं होगी। जबकि अपने यहां तो जहां हम ग़लती करने जाएंगे, प्रभु मुक्तों के साथ इंटरवेन करके हमें रोक लेंगे और हमारे स्वभाव का दर्शन करा देंगे।*** *तो, ऐसा सुनहरा मौका न कभी आया है, न कभी आएगा। क्योंकि महाराज ने ही आशीर्वाद दिये हैं कि मैं तो तुम्हें अक्षरधाम का सुख देने के लिए आया हूँ। इस लोक में तो एक सिद्ध-महात्मा भभूति देते हैं तो भी सुख मिल जाता है। पर,* ***इटरनल सुख पाने का तरीका-राह, मुक्तों के बीच में रह कर इनके साथ सुहृदभाव से रहने में है।*** *इस बात का हमें एहसास होगा कि ओहो, आज से दस साल पहले हम क्या सोचते थे, अब हमारी सोच में कितना फर्क पड़ गया है? पाँच साल पहले हम कैसे थे और एडवांसमेंट हुई। जहां प्रभु साक्षात् ऐसे संत के द्वारा काम करते हैं, वहीं प्रगति का, चैतन्य के विकास का मार्ग शक्य बनेगा। हम तो खूब भाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे संतों ने अपनी गोद में बिठा लिया। हम गए नहीं थे, इन्होंने ज़बरदस्ती ट्रिक से, प्यार से, डांट से, संजोग बना कर या एक्सीडेंटली भी हमें पकड़ लिया।* ***अब इनकी पकड़ से हम बाहर जाने की कोशिश न करें। यदि कोशिश करेंगे तो भी बाहर जा नहीं पायेंगे। तो, थोड़ी मार खानी पड़ेगी और फिर रीट्रिट होकर इसी मंडल के अंदर शामिल होना ही पड़ेगा।*** *समझदार के लिये तो इशारा काफ़ी है। इस दिशा में हम आगे बढ़ते रहें... नये साल की हमारी यह प्रार्थना और संकल्प काकाजी जल्द से जल्द पूरा करें यही अभीप्सा...*

तदोपरांत, **प.पू. गुरुजी** के साथ हरिभक्तों ने **अन्नकूट के थाल एवं आरती** के लिए कल्पवृक्ष हॉल की ओर प्रस्थान किया। पूरे वर्ष में हम जो भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन खुद खाते हैं, वे अधिकतर स्टील के एक जैसे बर्तनों में लगाये गये और कुछ मुरादाबाद के **पू. अतुल अग्रवालजी** द्वारा भेजे लकड़ी के डोंगों में लगाये गये।

आरती के बाद दोपहर 4 बजे तक सभी ने **कढ़ी, चावल, मिक्स सब्जी का महाप्रसाद** लिया। शाम 5:30 बजे के करीब श्री ठाकुरजी के समक्ष लगे सभी व्यंजनों को उपस्थित मुक्तों में वितरित किया। इसी दौरान कुछ बहनों-भाभियों ने दूर-दराज़ रहते भक्तों को भेजने के लिए अन्नकूट के प्रसाद के डिब्बे तैयार किये और अन्य बहनों-भाभियों ने अन्नकूट के बर्तन मांजने की सेवा करके 'गरबा' किया। यूँ, सेवा करते-करते प्रभु की मूर्ति का आनंद लेकर सभी अपने घर लौटे। सच कहें तो प्रगट स्वरूपों की हाज़िरी में त्यौहार-मंगल अवसर मनाना ही जीवन की धन्यता है।

22 अक्तुबर– धनत्रयोदशी निमित्त महापूजा

24 अक्तुबर– दीवाली निमित्त शारदा पूजन...

महाराज सबको तन, मन, धन और आत्मा से सुखी व समृद्ध रखें... -प.पू.गुरुजी

27 अक्तुबर– अन्नकूटोत्सव की पूर्व तैयारियाँ...

27 अक्तुबर– वार्षिक स्नेहमिलन सभा...

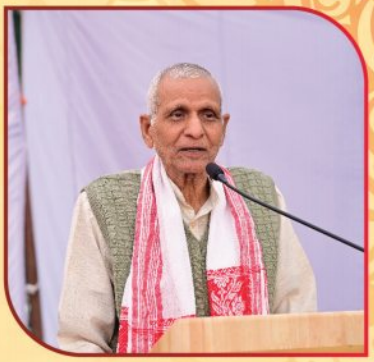

अन्नकूट थाल, आरती एवं महाप्रसाद...

प्रभु मेरे जीमने आये रे, प्रीतम को क्या-क्या भाये रे...

इनको नहीं कोई स्वाद, इन्हें तो मैत्रीभाव, सुहृदभाव, एकता, कुटुंबभाव भाये रे...

व्रतोत्सवसूची

(1) दि.20.11.'22, रविवार — एकादशी, व्रत

(2) दि. 1.12.'22, गुरुवार — ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का प्राकट्योत्सव

(3) दि. 4.12.'22, रविवार — एकादशी, व्रत

(4) दि.16.12.'22, शुक्रवार — धनुर्मास प्रारंभ

(5) दि.19.12.'22, सोमवार — एकादशी, व्रत

(6) दि. 2.1.'23, सोमवार — एकादशी, व्रत

(7) दि. 6.1.'23, शुक्रवार — पौषी पूर्णिमा,
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का दीक्षा दिन

(8) दि. 13.1.'23, शुक्रवार — लोहड़ी, प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन

(9) दि. 14.1.'23, शनिवार — मकर संक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन

(10) दि. 18.1.'23, बुधवार — एकादशी, व्रत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि

(11) दि. 26.1.'23, गुरुवार — वसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती
गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की प्राकट्य तिथि
प्रजासत्ताक दिन

(12) दि. 29.1.'23, रविवार — सद्. गोपाळानंदस्वामीजी की प्राकट्य तिथि

(13) दि. 1.2.'23, बुधवार — एकादशी, व्रत

(14) दि. 3.2.'23, शुक्रवार — गुरुहरि काकाजी का साक्षात्कार दिन
दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव

(15) दि. 15.2.'23, बुधवार — ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी का प्राकट्य दिन

(16) दि. 16.2.'23, गुरुवार — एकादशी, व्रत

(17) दि. 18.2.'23, शनिवार — महाशिवरात्रि, व्रत

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor : **SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052